तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १ रुपया
दीवाना

पंचतंत्र

घर घर की बात

शिक्षा—हर घर में कुछ न कुछ खूबी होती

साप्ताहिक भविष्य

पं॰ कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं॰ हंसराज शर्मा

मेष : सफलता तो नसीब होगी परन्तु परेशानी अकारण ही रहेगी, कारोबारी योजनाओं पर विचार, यात्रा भी करेंगे जो सफल रहेगी, व्यय होने से आर्थिक चिन्ता, प्रयास सफल रहेंगे, लाभ अच्छा।

वृष : आर्थिक लाभ समय पर मिलता रहेगा कामों में रुचि बढ़ेगी, सुस्ती आदि का प्रभाव रहेगा, काम भी समय पर न बन पायेंगे, स्थायी काम धन्धों से लाभ होगा, यात्रा सफल, झगड़े आदि से दूर ही रहें।

मिथुन : कामों में व्यस्तता काफी रहेगी, व्यय अधिक, आय यथार्थ, प्रयास करने पर काम बन जायेंगे, यात्रा हो सकती हे, कोई अप्रिय घटना होने से परेशानी, दौड़-धूप काफी रहेगी।

कर्क : कारोबार सुधरेगा, नई योजनाओं पर व्यय, शुभफल बढ़ेंगे, सुख साधनों में वृद्धि और खर्चा भी काफी होगा, राजकीय कामों में सफलता मिलेगी और आपकी दौड़-धूप सफल रहेगी।

सिंह : झगड़े, झंझटों से मन परेशान, व्यय बढ़ेगा. प्रयास करने पर थोड़ी बहुत सफलता मिलने लगेगी, वातावरण अनकुल हो जावेगा लाभ खर्च बराबर, विरोधी लोगों से बचें, यात्रा सफल रहेगी।

कन्या : घरेलू हालात से परेशानी, मनोरंजन आदि पर व्यय अधिक, रुकावटें दूर होंगी. ऋण आदि के कामों में सफलता, किसी विशेष काम के पूरा होने से साहस बढ़ेगा और खुशी भी होगी।

तुला : लाभ देर से या आशा से कम, प्रयास द्वारा सफलता मिलेगी, आर्थिक क्षेत्र में विकास होगा, यात्रा में सुख व मान, करोबार सुधरेगा, लाभ भी अच्छा होगा, घरेलू चिन्ता रहेगी.।

वृश्चिक : काम बनते रहेंगे, हालात में भी सुधार होता जावेगा, संघर्ष काफी रहेगा, कारोबार की दशा पहले जैसी ही, लाभ अच्छा होगा, काम रुक-रुक कर बनेंगे, व्यय अधिक होगा,।

धनु : परिश्रम करने पर काम बन जायेंगे, आय-व्यय समान, लाभ बढ़ेगा, परन्तु मिलेगा कुछ देर से, व्यय अधिक, सुस्ती का प्रभाव रहेगा, लाभ आशा से अधिक, नए काम का विचार एवं व्यय।

मकर : दिन ठीक नहीं. झगड़े आदि से परेशानी, आय से व्यय अधिक, दौड़-धूप करने पर काम बन जायेंगे, कोई विशेष सूचना मिलेगी, यात्रा हो सकती है, कोई बिगड़ा काम बन जावेगा।

कुम्भ : आर्थिक स्थित अनुकूल रहेगी, नई योजना पर व्यय होगा, यात्रा पर न जाएं तो अच्छा है, दिन ठीक नहीं, छोटी-छोटी बातों से परेशानी, उलझनें काफी रहेंगी, लाभ आशा से कम होगा।

मीन : आय-व्यय समान, परिश्रम करने पर मिश्रित फल मिलेंगे, लाभ में वृद्धि घरेलू खर्चा काफी होगा. सेहत नरम, रुकावटें दूर होंगी शत्रु पर विजय, कारोबार ठीक चलेगा, यात्रा न करें।

आपके पत्र

एक लम्बे अन्तराल के बाद मैं पत्र लिख रहा हूं, परन्तु इस बीच दीवाना हमेशा पढ़ता रहा हूं। अंक—९ में 'कौनसी किताब पढ़ें, के सुझाव बड़े ही रोचक व सही हैं। 'नजर के नजारे' पसन्द आया।

कागज का मूल्य बढ़ने के कारण करीब-करीब अन्य सभी पत्रिकाओं ने अपने मूल्य में कुछ-न-कुछ वृद्धि अवश्य की है जबकि आपने हास्य की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका दीवाना के मनोरंजन कर में कोई परिवर्तन नहीं किया है इस बात की मुझे तथा मेरे मित्रों को बहुत खुशी है

रवि रंजन, शिवपुरी—पटना

नया अंक ठीक समय पर मिल गया। मुख पृष्ठ देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मोटू-पतलू, और अनहोनी बहुत अच्छी लगी। क्या में रंगीन कार्टून भेज सकता हूँ? कार्टून का साइज क्या है? कहानी भेजने के लिए क्या करना होगा?

योगेन्द्र गुप्ता—ग्वालियर

रंगीन कार्टून स्वीकृत नहीं किये जाते। कार्टून का साईज ३"×४" होता है। —स॰

दीवाना का अंक १० मिला। मुख पृष्ठ पर चिल्ली को पुस्तकालय में देखा, देखते ही हंसी का फव्वारा छुट पड़ा। सचमुच दीवाना मनोरंजन की एक मशीन है। जो बच्चों, बूढ़ों और जवानों का मनोरंजन करती है। दीवाना की हर सामग्री अच्छी है। मोटू-पतलू, काका के कारतूस, सिलबिल-पिलपिल का तो कोई जवाब नहीं।

धारावाहिक उपन्यास अनहोनी अति रोचक रहा। लेखिका जी को मेरी तरफ से शुभकामनायें। कहानी भेजनी हो तो किस पते पर भेजें।

गुलशन नागपुर—सीवर

कहानी भेजने का पता—सम्पादक, दीवाना तेज साप्ताहिक, ८-ब, बदुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-२।

दीवाना अंक १० मिला, पढ़ा। इसमें मोटू-पतलू काफी मजेदार रहा। आप पत्रिका को पूरा रंगीन भेजा करें तो फिर इसमें बहार आ जाए। सिलबिल पिलपिल के कारनामे बड़े ही रोचक लगे। दीवाना पेज-२ पढ़कर मैं तो हंस हंस-कर दीवाना हो गया। बिल्लू के करामाती जूते बहुत अच्छे लगे। पूरा पढ़ने की उत्सुकता मन में बनी रह गई। ऊंह डिटर्जेन्ट पाउडर का विज्ञापन पढ़कर बहुत खुश हुआ। खूब अपने दिल को साफ किया। दीवाना का हर अंक ऐसा ही भेजा करें। अगले अंक के इन्तजार में--

हरी ठाकुर—रायगढ़

एक लम्बे इंतजार के बाद दीवाना का अंक १० प्राप्त हुआ। इस अंक के मिलते ही सारे शिकवे भूलकर पढ़ने बैठ गया।

धारावाहिक उपन्यास 'अनहोनी' की अंतिम किस्त पढ़कर आंखों से आंसू टपक पड़े। सचमुच लेखिका ने मार्मिक वर्णन किया है।

दीवाना के स्थायी स्तंभों में से पंचतंत्र, काका के कारतूस, मोटू-पतलू, सिलबिल-पिल पिल पसंद आए। शाबास बेटे आइसक्रीम खाओ तथा पुरानी कहावतें नये चेहरे, पढ़कर हंसते-हंसते पेट में बल पड़ गये।

उमेश ज्ञानचंदानी—नागपुर

दीवाना का अंक ९ प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ देखकर ही हंसी आई। धारावाहिक उपन्यास 'अनहोनी' बहुत अच्छी लगी और सिलबिल-पिलपिल, फैन्टम और 'जंगल शहर' भी अच्छी लगी। सवाल यह है मजेदार थी। मगर हमारी चिल्ली लीला किधर गई? सम्पादक जी मेरा आपसे अनुरोध है कि मोटू पतलू को रंगीन कर दें और दीवाना के अंतिम पृष्ठ पर पहले जैसा ही किसी फिल्मी कलाकार का फोटो छपवायें। आशा है आप इस ओर ध्यान देंगे।

सुनील राज श्रेष्ठ—काठमान्डो, नेपाल

मुख पृष्ठ पर

सुबह सुबह तो मेक-अप करती
लड़कियां अक्सर सारी
असली सूरत छिप जाती
जब सुन्दर लगती नारी।
सुबह सुबह चिल्ली भी अपना
मुंह रंग लेता सारा
लड़किया बेचारी मुग्ध हो जातीं
जब मुखड़ा दिखता प्यारा॥

दीवाना

अंक : १३ वर्ष : १६

१ सितम्बर १९८०

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफ़र मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे की दरें वार्षिकः ४८ रु०
छमाहीः २५ रु० द्विवार्षिकः ९५ रु०

हैपी इन ए जिफ्फी

उपभोक्ता सामग्री वाले रोज कुछ न कुछ नया तिकड़म निकालते रहते हैं जैसे चाय वालों ने टी बैग निकाले है। उबलते पानी में टी बैग को चार डुबकियां दीं और चाय तैयार। यह तो उदाहरण रहा — अब और चीजों को लीजिए, खासकर वे जिनमें विभिन्न निर्माताओं में कड़ी स्पर्धा है। जबरदस्त कम्पीटीशन है। उन्हें तो अपने माल को आगे करने के लिए ऐसी तिकड़में निकालनी ही पड़ेगी जिसका उपभोगताओं पर जादुई प्रभाव हो। ऐसे ही कुछ तिकड़मों की कल्पना जिन्हें हम भविष्य में प्रयोग में लायें जाते देख सकते हैं।
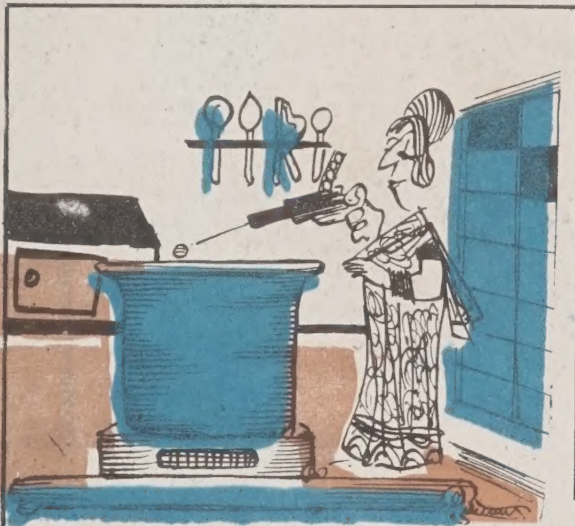
हल्दी अथवा मसाले की गोलियां मिलने लगें जो पिस्तौल नुमा गन से चलाई जा सकें। दाल सब्जी में आवश्यकतानुसार गोली मारी जा सके (चम्मच द्वारा कम ज्यादा पड़ने का खतरा दूर होगा)।
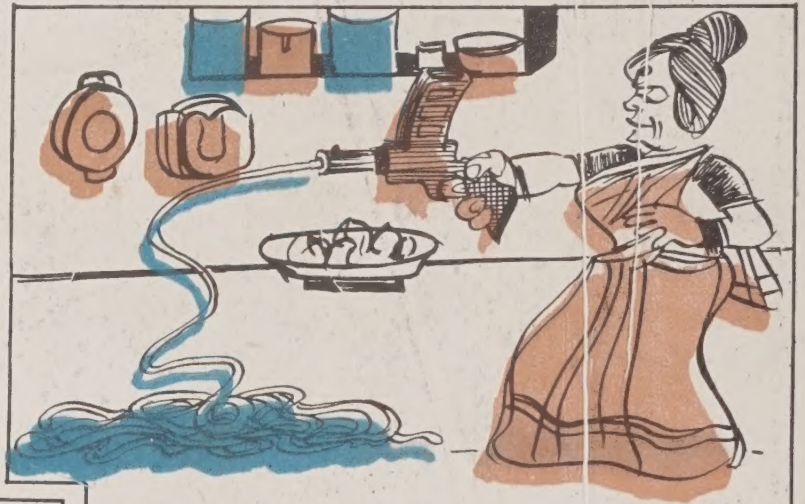
सेवंई गन

ऐसी गन मिलने लगे जिसमें आटा मैदा भरा और लबलबी दबाई नहीं कि गन के मुँह से सेवंई की धार निकले।

पाइप पीने वालों को शायद धुआं खींचने के लिये फेफड़ों पर जोर न लगाना पड़े। पाइप के अन्दर नीचे छेद में एक छोटा सा एक्ज़ॉस्ट फैन लगे जो धुआं खुद ही मुँह की ओर फेंके।

कभी सॉस की बोतल से सॉस निकालने में बड़ी दिक्कत होती है। भविष्य में सॉस की बोतलें पम्पयुक्त होंगी। पम्प मारा और प्लेट में हवा के दबाव द्वारा इच्छानुसार सॉस की मात्रा फलश की।
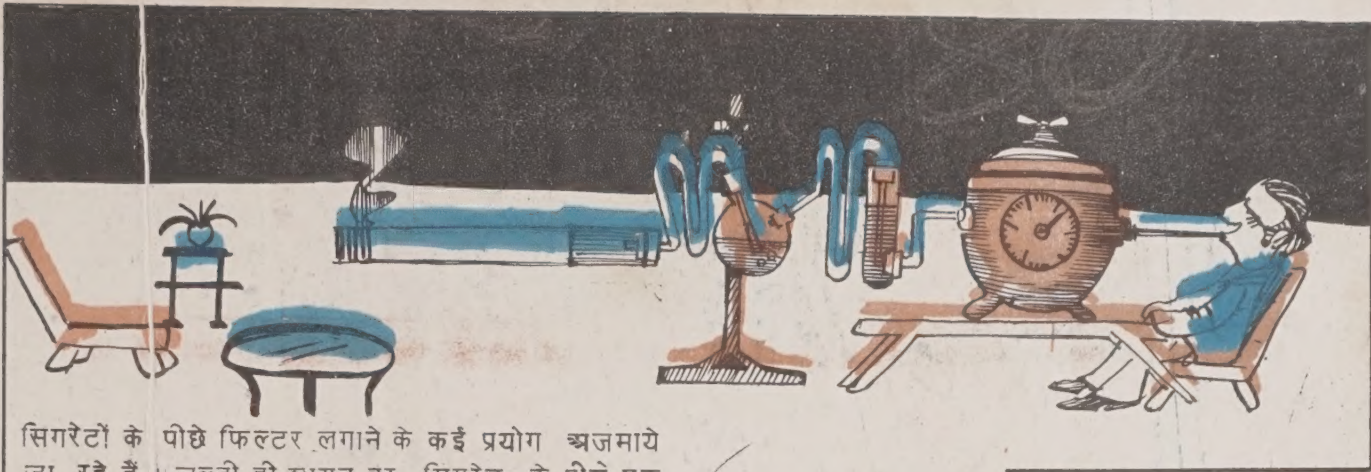
सिगरेटों के पीछे फिल्टर लगाने के कई प्रयोग अजमाये जा रहे हैं। जल्दी ही शायद हर सिगरेट के पीछे एक मिनी लेबोरेट्री ही जुड़ी मिले जो निकोटीन को मुहं में आने तक धुयें से पूरी तरह निकाल ले।

बिस्कुट के पैकेटों के साथ रिकार्ड चेन्जरनुमा यंत्र मिलने लगे। आप केवल मुहं खोल कर बैठेंगे और चेन्जर बिस्कुट उठा-उठाकर मुहं में रखता जायेगा।

कोल्ड ड्रिंकों में तो बहुत कम्पीटीशन है। शायद कोई फलां कोला वाला कोला की बोतल के अन्दर ही माइक्रो टुल्लू पम्प फिट कर दे। ऑन करते ही कोला स्ट्रा में से मुंह में स्वयं ही चढ़ना शुरू होगा। (यह प्रयोग शराब या बीयर की बोतलों में भी हो सकता है)।
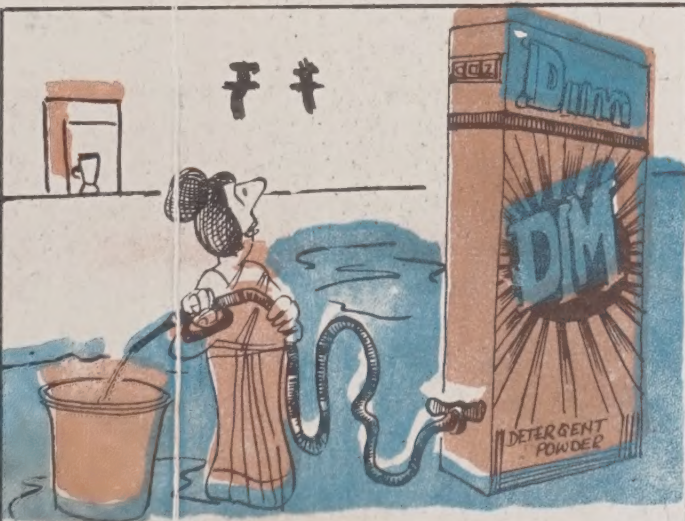
आजकल के डिटर्जेन्ट के पैकेटों से बाल्टी में डिटर्जेन्ट डालना तुक्के का काम होता है। कभी ज्यादा पड़ जाता है कभी कम, शायद कोई कम्पनी अपने पैकेटों में वैसा ही यन्त्र फिट करे जैसे पैट्रोल पम्पों पर होता है। जितने ग्राम डालना हो उतना डालो। मीटर पर तौल के हिस्से उभरते रहेंगे।

माथे पर चन्दन लगाने वालों के लिये कोई लिपस्टिक निर्माता लिपस्टिक के आधार पर ही चन्दनस्टिक बनाये। चन्दन लगाना ऐसे ही सरल हो जायेगा जैसे होंठों पर लिपस्टिक लगाना।

राज गोपाल शर्मा, नारनौल (हरियाणा)

प्र० : आजकल सबसे बड़ा न्यायाधीश कौन है ?

उ० : पत्ता जिसका कट गया, सत्ता जिसके हाथ,
बड़ा वही जज जानिये, चले समय के साथ।

भूषण उपाध्याय, शिवपुर, कनखल

प्र० : कुत्ते की पूंछ हमेशा टेढ़ी ही रहती है, डालकर लोहे की पाइप में, उसे सीधी कर सकते हैं क्या ?

उ० : कोशिश करके थक गए, हांसिल हुआ न कुछ्छ,
पाइप टेढ़ी हो गई, सीधी हुई न पुच्छ।

सुनील कुमार बरनवाल, रांची (बिहार)

प्र० : आजकल लड़कियों के बाल छोटे क्यों होते जा रहे हैं ?

उ० : लड़के लम्बे बाल रख, चलें जनानी चाल,
इस जवाब में लड़कियाँ, रक्खें छोटे बाल।

राजेश भूटानी, रिवाड़ी

प्र० : अगर काकी रूठ कर भाग जायें तो ?

उ० : अपनी हंस मुख लेखनी, उनका गर्म दिमाग,
भाग जायें यदि रूठकर, जागें अपने भाग।

विनोदपुरी रंजू, लुधियाना (पंजाब)

प्र० : औरत खामोश कब रहती है ?

उ० : प्रश्न गलत है 'आपका', है हमको अफसोस,
उसको औरत मत कहो, जो रहती खामोश।

रवि जायसवाल, मोहन नगर, नागपुर

प्र० : मुरझाये हुए फूल की अन्तिम अभिलाषा क्या होती है ?

उ० : पुनर्जन्म में विधाता, नई जवानी देंय,
बांह गले में डालकर, कलियां चुम्बन लेंय।

गणेश तिवारी, बसई रोड, बम्बई

प्र० : यदि आपको नर से नारी बना दिया जाये तो ?

उ० : दिखला करके त्रिया हठ, सत्ता पर अड़ जायें,
इन्दिरा जी को हटा कर, कुर्सी पर चढ़ जायें।

वेद प्रकाश ग्रोवर, कैथल

प्र० : काका जी आप कौन सा घी खाते हैं जो ७४ वर्ष की उम्र में भी स्वस्थ, मस्त हैं ?

उ० : क्यों 'काका' की हैल्थ पर ईर्ष्या करते आप,
घी खाते हैं, नित्य प्रति असली 'टुनटुन छाप'।

बच्चू परवाना, कठोकर तलाब, गया

प्र० : रात कटती नहीं तनहाई में,
दिन गुजरता नहीं जुदाई में।

उ० : लूटमार चहुंदिशि चली, तुम क्यों हो बेकार,
रेल लूटिए रात को, दिन में मोटर कार।

विनोद कुमार अकेला, विहियां (भोजपुर)

प्र० : काकाजी, अब आपके सही सलामत दांत कितने हैं ?

उ० : ओल्ड दांत सब गिर गये, कृपा करी जगदीश,
नये-नये फिर से उगे, हैं पूरे बत्तीस।

विनोद सुजान, शाहदरा, दिल्ली-३२

प्र० : सभी को कोई न कोई कष्ट होता है, आपको क्या कष्ट है ?

उ० : काकी बूढ़ी हो गई, यही एक है कष्ट,
धन्यवाद दें हम उसे, करे कष्ट को नष्ट।

किरन कुमार राठौर, बम्बई-११

प्र० : काकी से आप कुछ बातें छिपाकर भी रखते हैं क्या ?

उ० : है अपनी इक प्रेयसी, पका-पिलपिला आम,
काकी को उसका कभी नहीं बताते नाम।

दिलीप कुमार बेहरानी, बाँसवाड़ा (राज०)

प्र० : आजकल के विद्यार्थी कौन सी राह पर चल रहे हैं ?

उ० : पढ़ना-लिखना, हैल्थ का करता सत्यानाश,
नकल करो, हो जाओगे, फर्स्ट डिवीजन पास।

दीन दयाल 'जिज्ञासु', बरेली

प्र० : इस वर्ष आपने 'काका हाथरसी पुरस्कार' कौन से हास्य कवि को दिया है ?

उ० : बम्बई बिड़ला मंच पर, एप्रिल तारीख चार,
सुरेन्द्र शर्मा को दिये, रुपये पाँच हजार।
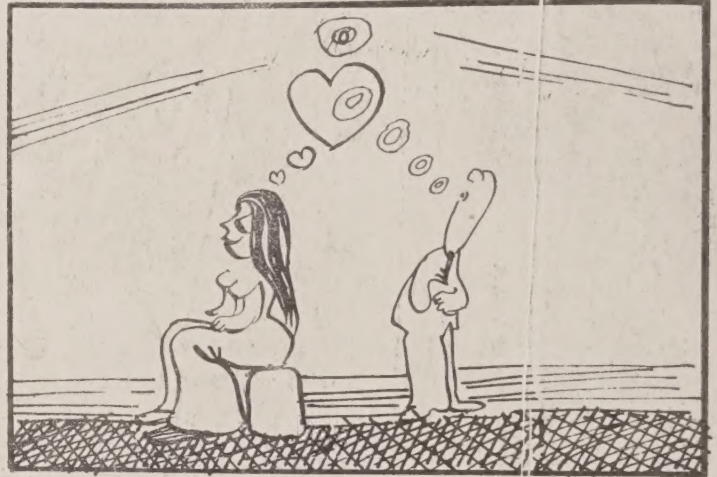
नरेन्द्र कुमार निन्दी, कपूरथला

प्र० : मेरी प्रेमिका के पत्र आते हैं तो उनके ऊपर की डाक टिकिट उतरे हुए क्यों होते हैं ?

उ० : चाट-चाट कर प्रेमिका, टिकटें चिपका देय,
दूजा प्रेमी बीच में, टिकटों का रस लेय।

अनिल कुमार गर्ग, कोटद्वार (पौड़ी-गढ़वाल)

प्र० : आप होली के दिन कारतूस का प्रयोग करेंगे या रंगों का ?

उ० : शुभ दिन आने दीजिए, क्यों होते गमगीन,
होली पर हो जायेंगे, कारतूस रंगीन।

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी 'ऊषा', विक्रमगंज

प्र० : सफर में मन बहलाने के लिए पत्रिका रखनी चाहिए या प्रेमिका ?

उ० : आवश्यक दोनों अदद, सदा राखिए साथ,
पहलू में हो प्रेमिका, फिल्म पत्रिका हाथ।

रोशन व्यास, मुरली वाधवानी, इन्दौर

प्र० : हमें प्यार करना नहीं आता, क्या करें हम ?

उ० : नित्य सिनेमा देखिए, सीख जाओगे प्यार,
जान हथेली पर रखो, प्यार तेग की धार।

नरेन्द्र कुमार गाबा, हांसी

उ० : यदि जीवन मरण भगवान के हाथ में न होकर आपके हाथों में होता तो आप क्या करते ?

उ० : दे देता मैं हाथ में युवकों के हथियार,
सब बूढ़ों को मार दो, बने छात्र सरकार।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सरदर्द ग़ायब

Saridon

सिर्फ़ एक

शक्तिशाली
सुरक्षित
सिर्फ़ एक काफ़ी है.

RP. 5977

निर्माता निर्देशक बी' डी. खोपड़ा आजकल एक अनोखी फिल्म बना रहे हैं। इसमें घसीटा राम हीरो है और गांव की जमीन और अपना मकान बेच कर घसीटा राम ने इस फिल्म में ढाई लाख रुपया लगाया है। मोटू-पतलू और डाक्टर झटका भी इस फिल्म में काम कर रहे हैं। फिल्म की शूटिंग के समय इन्डस्ट्री के बड़े-बड़े स्टार आये हुए हैं। उनसे मिलिये और आप भी फिल्म की शूटिंग के नजारे देखिये।

हेमा ने बूढ़ धर्मेन्द्र से शादी करने में बेकार ही इतनी जल्दो की —— मैं जवान हूँ और देखते ही देखते सिलवर जुबली स्टार बनने वाला हूँ।

डिम्पल कपाड़िया को पता लगा गया होगा राजेश भाई कि मैं सुपर स्टार बनने वाला हूँ, तभी उसने तुम्हारा पत्ता काट दिया।

चलो, अब शूटिंग के लिये तैयार हो जाओ। अचूक कुमार के साथ एक ट्रेजेडी होने वाली है।

अगले सीन में
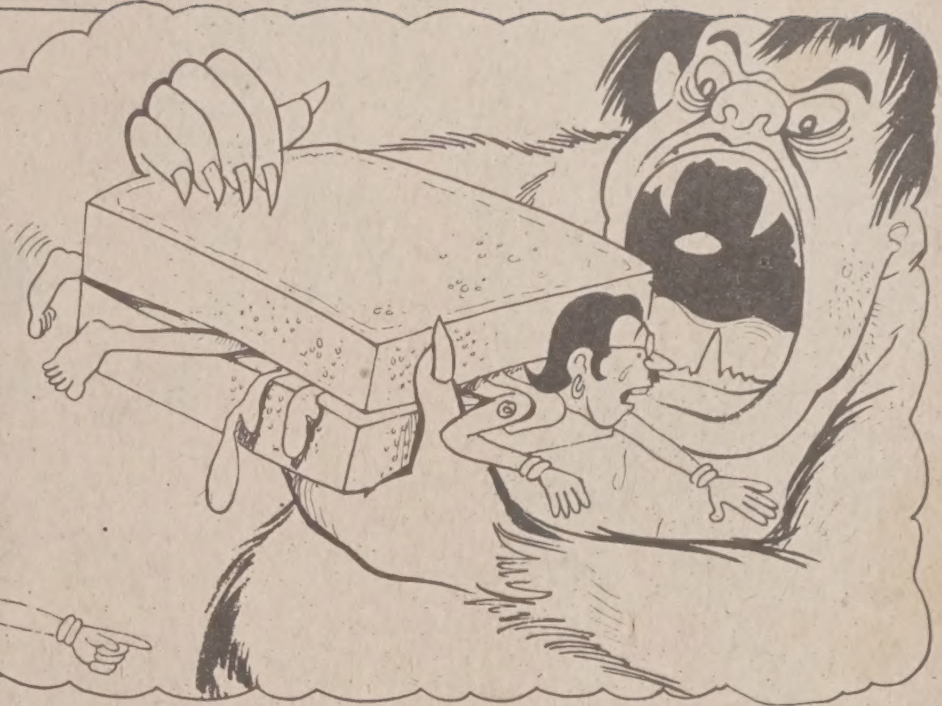
नहीं-नहीं । अब तुम्हारी भेंट राजकुमारी से होगी । अब तुम अधिकतर सीनों में राजकुमारी के साथ-साथ रहोगे ।

राजकुमारी के साथ-साथ रहूंगा । यह हुई ना जी खुश करने वाली बात ।

चलो, मेकअप पूरा करके जादूगरनी को लाओ ।

इस फिल्म में जादूगरनी भी है ! बड़ी अनोखी कहानी बनाई है डायरेक्टर खोपड़ा ने, मेरी तो पहली ही फिल्म हिट जायेगी ।

इस सीन में जादूगरनी राजकुमार के सिर जादू का डंडा घुमायेगी और मंत्र पढ़ेगी । साउण्ड लाइट रेडी, ऐक्शन ।

ओके—! कट । अब राजकुमार को सीन से हटा कर उसकी जगह मैंढ़क बैठा दो ।

जादूगरनी ने राजकुमार को मैंढ़क बना दिया है । अब जादूगरनी को यहाँ से गायब हो जाना है । इसके बाद हम मैंढ़क को कुएें में धक्का दे देंगे ।
ओके ! रेड्डी, ऐक्शन ! जादू के प्रभाव से मैंढ़क बना राजकुमार अब कुएें में छलांग लगा रहा है ।
तभी गेंद से खेलती हुई एक राजकुमारी वहाँ आ जाती है ।
और उसकी गेंद कुएें में जा गिरती है ।
गेंद कुएें में गिरने से राजकुमारी बहुत दुःखी है । राजकुमारी के साथ उसका सेवक भीम सैन भी है । यस ! रेडी !! डायलाग चालू करो ऐक्शन ।
देखो भीम सैन, मेरी गेंद कुएें में गिर गई है ।
गेंद क्या देखेगा, कुआँ भी दिखाई नहीं देगा इस भीम सैनी काजल की डिब्बी को ।
तुम कुएं में छलांग लगाओ भीम सैन और मेरी गेंद निकाल लाओ ।
गेंद नदी में गिरी होती तो मैं श्री कृष्ण की तरह नदी में छलाँग लगाकर कालिया नाग से लड़ता और गेंद निकाल लाता । इस अंधे कुएें में छलाँग लगाना तो मौत के मुंह में कूदना है । मैं बाल्टी से गेंद निकालने की कोशिश करता हूं ।
गहरे कुएें में इतना अंधेरा है कि गेंद दिखाई ही नहीं दे रही है ।
कभी सूरज का उजाला भी दिखाई दिया है तुझे अपनी आँखों की सुरमेदानी से ?
लाओ मैं गेंद निकालने की कोशिश करती हूं ।
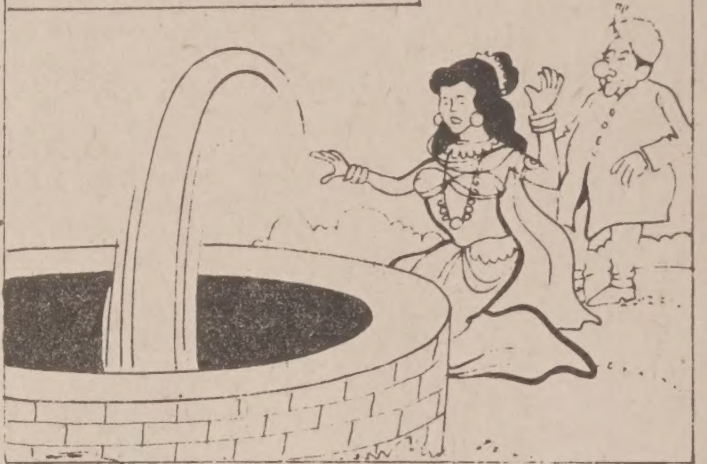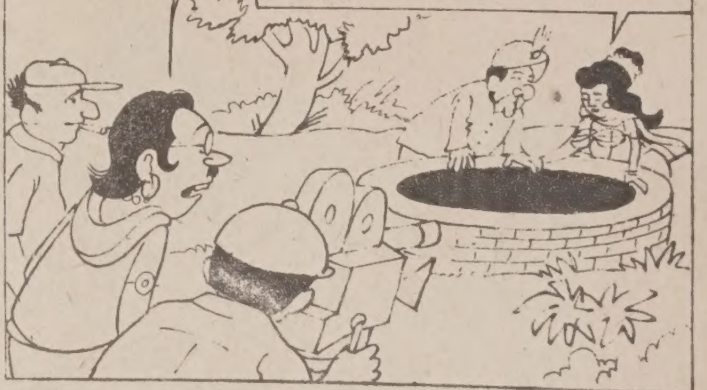
देखो भीम सेन गेंद की बजाये यह मैंढ़क बाल्टी में आ गया है।
कहानी बिल्कुल ठीक चल रही है। फिल्म का हीरो अचूक-कुमार कुएं से बाहर निकल आया है।

वह अचूक कुमार है ? वह मैंढ़क जो कुएं से निकला है ?
हाँ वही अचूक कुमार है।

अचूक कुमार मैं हूं। फिल्म का हीरो मैं हूं।
वह भी तुम ही हो। अब तुम जादू के असर से मैंढ़क बने हुए हो। अब वह मैंढ़क फिल्म का हीरो है। और वह ही अचूक कुमार है।

आगे की शूटिंग चालू करो। रेडी ! ऐक्शन।
मैं तुम्हारी गेंद निकाल लाऊं तो बदले में तुम मुझे क्या दोगी ?

मैं तुम्हें अपना हार पहना दूंगी। तुम्हारे सिर पर ताज रख दूंगी।

लो अब तो गेंद निकाल लाओ कुएं से।
वैरी गुड ! शूटिंग बिल्कुल ठीक चल रही है। अचूक कुमार के सिर पर ताज रखो

मेंढ़क को अचूक कुमार कह रहे हो ! ताज उसके सिर पर रखोगे तो मेरा सिर क्या ईंट से फोड़ने के लिए है !!
क्यों शोर मचा रहे हो ? कहा ना वह भी तुम ही हो ।
हमने कहा था ना, आगे चल के तुम्हारी भेंट एक राजकुमारी से होगी । आगे के अधिकतर सीनों में तुम राजकुमारी के साथ काम करोगे । देख लो तुम राजकुमारी के साथ काम कर रहे हो ।
वह मेंढ़क राजकुमारी के साथ काम कर रहा है ।
कहा ना वह भी तुम ही हो ।
आगे की शूटिंग जारी करो । रेडी—! ऐक्शन !!
ऐसे नहीं राजकुमारी कुएं से गेंद निकाल कर लाने के लिए मेरी एक शर्त है ।
वह क्या ?
वचन दो कि मुझे अपना मित्र बना लोगी । मुझे अपने साथ महल में ले जाओगी और सदा अपने साथ रखोगी ।
में वचन देती हूं ।
तो फिर मैं अभी निकाल कर लाता हूं तुम्हारी गेंद ।
अचूक कुमार ने बिल्कुल ठीक कुएं में छलांग लगाई है ।
अब यह कुएं में ही डूब मरे तो अच्छा है ।
लो राजकुमारी संभालो अपनी गेंद ।
थेंक्यू वैरी मच ।
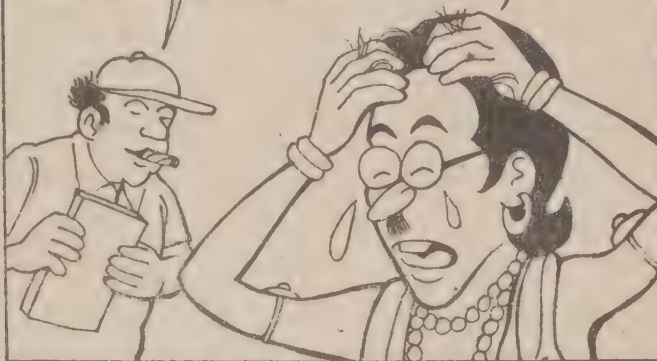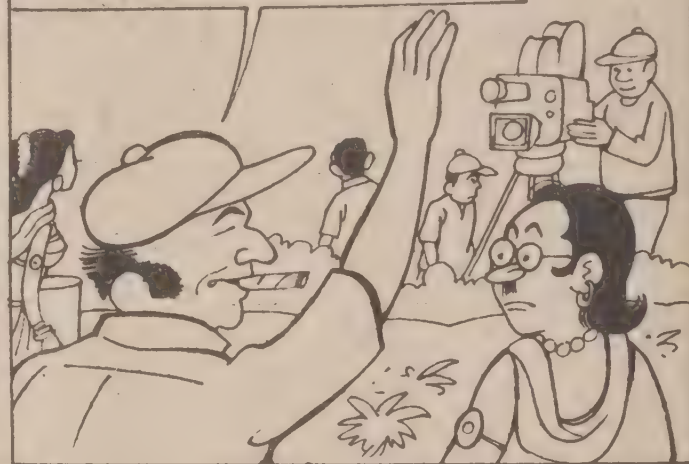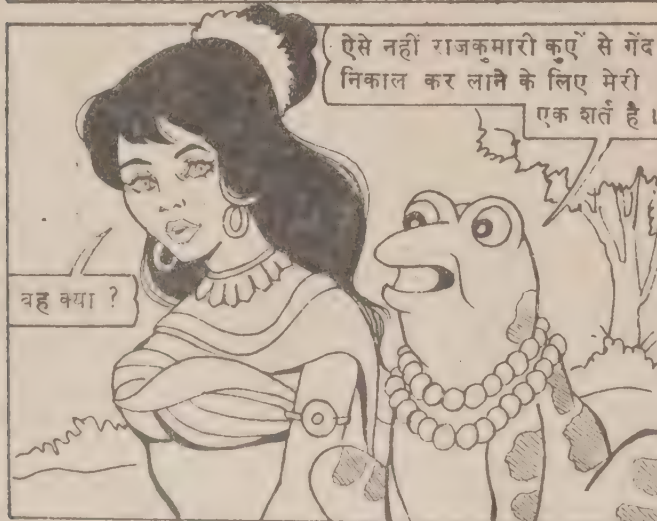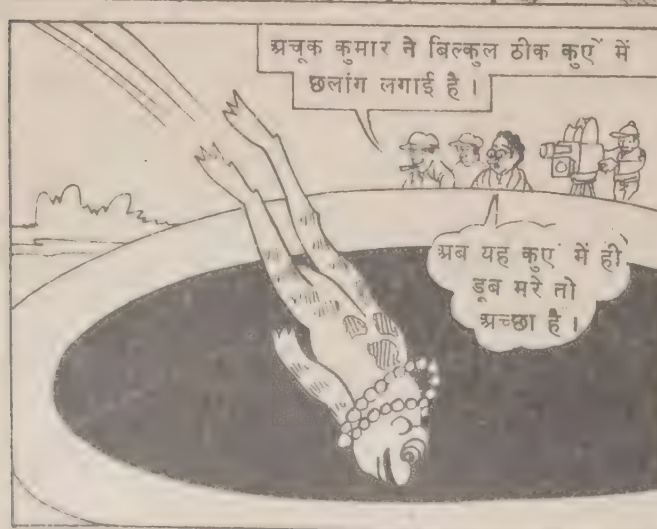
राजकुमारी ने वचन दिया था, कि मुझे अपना मित्र बनायेगी सदा मुझे अपने साथ रखेगी । राजकुमारी ने इतनी जल्दी अपना वचन भुला दिया ।

आगे की कहानी में मैंने फिल्म को एक खास टर्न दिया है । मेंढ़क बने अचूक कुमार को राजकुमारी के पीछे महल में जाने और फिर से राजकुमार बनने का नहीं मिलता ।

इसका मतलब है, अब राजकुमारी के साथ मेरा कोई सीन नहीं फिल्माया जाएगा ?
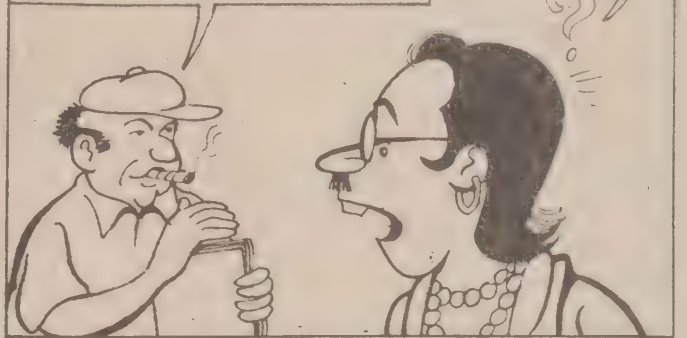
इसके बाद जो फिल्म बनी वह इस प्रकार थी ।
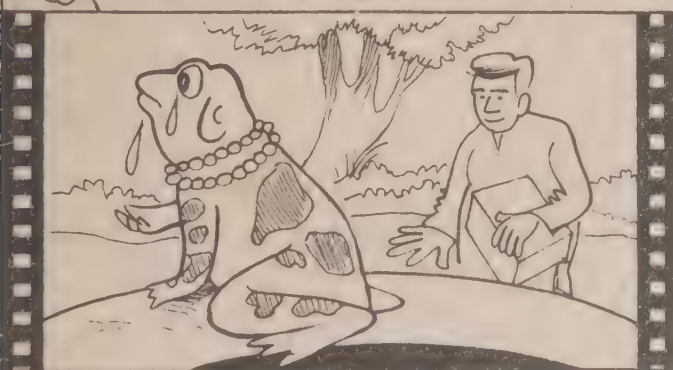
और उसने मेंढ़क को पकड़ कर एक डिब्बे में डाल लिया ।

बन्द डिब्बे से बाहर निकलने के लिए मेंढ़क उछल रहा था, पर उसकी हर कोशिश बेकार थी ।

मेंढ़क पकड़ने वाला एक होटल को मेंढ़क सप्लाई किया करता था और होटल वाले मेंढ़क का मीट बना कर अपने ग्राहकों को दिया करते थे । मेंढ़क पकड़ने वाला अब उस होटल की ओर जा रहा था ।

इस प्रकार मेंढ़क होटल के कुक के पास पहुंचा और कुक ने उसे काटपीट कर पकाने के लिये आंच पर चढ़ा दिया।

उसी रोज राजकुमारी का जी चाहा आज होटल का खाना खाया जाये। वह भीम सेन के साथ होटल पहुंच गई।

क्या लोगे भीम सेन?

मैं तो बस पुलाव खाऊंगा।

और मेरा जी आज मेंढ़क की टांग खाने को कर रहा है। ऐ वेटर। एक प्लेट पुलाव लाओ और एक मेंढ़क की टांग।

अभी लाया राजकुमारी।

थोड़ी ही देर में वेटर राजकुमारी का आर्डर लेकर आ गया।

पुलाव से बड़ी अच्छी खुशबू आ रही है।

मैं जरा मेंढ़क की टांग चख कर देखूं!

जैसे ही राजकुमारी ने मेंढ़क की टांग के मुंह लगाया वह राज कुमार की टांग में बदल गई।

आगामी अंक में ग्रपने इन प्रिय कलाकारों से मिलिये एक नई सचित्र और विचित्र कहानी में।

और अखबार में हमारे द्वारा अलीबाबा का संदूक खरीदे जाने की खबर से बहुत से गैंग फिर उसे पाने के लिये सक्रिय हो गए होंगे। या ऐसा होगा कि भारत में बदमाशों को उन दोनों के साथ जेल काटने का पता लग गया होगा और वह केवल इसी सन्देह पर कि जग्गी ने अलीबाबा को खजाने का पता बताया होगा अलीबाबा गायब हो गया। वह पुलिस के पास इसलिए नहीं जा सकता। क्योंकि वह पुलिस को बताने के लिए कुछ जानता ही नहीं।"

"बहुत अच्छा विषलेषण किया है तुमने महिन्दर।" लेकिन पत्र में जग्गी ने कुछ नहीं बताया क्योंकि उसे पता था कि दो बार सेंसर के हाथ से गुजरेगा। महिन्दर ने निष्कर्ष निकाला। श्याम ने चेतावनी दी, "अब सन्दूक के कारण सारे बदमाश हमारे पीछे पड़ जायेंगे। हमें पत्र में कोई सूत्र नहीं मिला मुसीबत से बचने के लिये इस संदूक से छुटकारा पाना चाहिए।"

महिन्दर ने श्याम का समर्थन किया, अब इस संदूक में हमारे लिए रखा ही क्या है। जादूगर रंजन कोका इसे चाहता है। चलो उसे ही दे दें।'

राजू ने हार मान ली, 'बहुमत के सामने मैं हार मान लेता हूं। हम सारा सामान ज्यों का त्यों वापिस सन्दूक में रख लेते हैं। अपने रिकार्ड या जरूरत पड़ने पर आगे की छानबीन के लिए हम जग्गी के एक पत्र की नकल अपने पास रखेंगे और मैं जादूगर रंजन से सौ रुपये नहीं लूंगा केवल दस रुपये लूंगा। एक मुसीबत की जड़ के इतना ज्यादा रुपये लेना ठीक नहीं है। श्याम तुम इस पत्र की नकल तैयार करो। मैं ड्राइंग रूम से जादूगर रंजन को टेलीफोन करता हूं और अपने कमरे से बेताल की खोपड़ी ले आता हूं।"

ठीक जब राजू अपने कमरे में पहुंचा तो राजू की माता जी बेताल की खोपड़ी को मुंह बाये घूर रही थीं।

'राजू' कांपती आवाज में वे हकलाई 'ये…ये चीज…' और हाथ से उन्होंने बेताल की ओर संकेत किया।

'क्या हुआ मां?' राजू की समझ में नहीं आया!

'ये मनहूस खोपड़ी!' गुस्से से वह बोलीं, 'जानते हो इसने अभी मुझ से क्या कहा? इसने कहा, 'बीबी जी नमस्ते, आलू छोले सस्ते।' इतनी भद्दी बात मुझसे कही।'

'बेताल की खोपड़ी ने तुम्हें ऐसा कहा?' राजू पूछ बैठा।

'बिल्कुल कहा इसने। मैं तुम्हारा कमरा साफ करने आई थी।मैंने इस खोपड़ी से कहा, 'मनहूस खोपड़ी पता नहीं राजू के पल्ले तुम कैसे पड़ीं। लेकिन मैं कहे देती हूं कि तुम इस घर में नहीं रहोगी। मैं तुम्हें खदेड़ दूंगी?

'और फिर…फिर…' उनकी आवाज कांपी, 'इसने मुझे वह बात कही।'

राजू ने मुश्किल से होठों पर आती मुस्कराहट को दबाया, 'मां यह बेताल की खोपड़ी है। इसके बारे में कहा जाता है कि यह बोलती है। अगर इसने तुमसे ऐसी बात की तो जरूर यह मजाक कर रही होगी।'

'मजाक? मेरे से मजाक करने की हिम्मत। एक कंकाल खोपड़ी दांत निपोर कर तुमसे 'बीबी जी नमस्ते आलू छोले सस्ते' कहे और वह मजाक मान लिया जाये। इसे अभी यहां से ले जाओ। यह मेरा आखिरी फैसला है।' राजू की अम्मां ने हथेली पर मुक्का मारा। राजू ने मां को शांत किया। जैसी आपकी आज्ञा। मैं तो इसे यहां से ले जाने के लिए ही आया था।'

गम्भीर मुद्रा में राजू चौखटे पर बैठे बेताल को उठाये हैडक्वार्टर लौटा और मां के साथ हुयी घटना अपने दोनों साथियों को बताई। माथे पर बल डालते हुए बोला, अब यह समझ नहीं आता कि बे..ल को मां से मजाक करने की क्या सूझी?'

श्याम ने व्यंग्य किया, 'शायद यह मजाकिया तबीयत वाली खोपड़ी है। जल्दी से इसे संदूक में बंद कर दो।'

राजू ने विनती की, इस घटना के बाद क्यों न हम अपना विचार बदलें। कुछ समय और बेताल और संदूक को अपने पास रखें। शायद यह कुछ और बोले।'

'नहीं…नहीं।' श्याम ने जोरदार प्रतिवाद किया। राजू के हाथ से खोपड़ी छीन ली और कपड़े में लपेट संदूक में ठूंस दिया।

'आंटी इससे छुटकारा पाना चाहती हैं। हम इसे दफा करना चाहते हैं। जादूगर कोका को फोन कर दिया है। अब हम अपने वादे से नहीं मुकर सकते। कुछ गुत्थियां ऐसी होती हैं जिन्हें न सुलझाना ही अच्छा होता है। उसने संदूक का ढक्कन बंद कर ताला लगा दिया! राजू कुछ नया तर्क सोच ही रहा था कि गेट के बाहर कार रुकने की आवाज आई। खिड़की से राजू ने देखा कि कार से जादूगर कोका उतर रहा था।

तीनों नीचे उतर आये। जादूगर रंजन कोका ने राजू की ओर देखकर पूछा, 'तोऽऽ…संदूक मिल ही गया। मैं कहता न था ठीक है न बेटे?'

'जी हां।' राजू ने उत्तर दिया, 'अगर आपको आवश्यकता हो तो आप उसे ले जा

सकते हैं।'

'आवश्यकता है भई आवश्यकता है। ''यह पैसे रहे सौ रुपये।'

'मैं आपसे सौ रुपये नहीं लूंगा। मैंने दो रुपये में इसे खरीदा था आप दस रुपये में ले जाइये।'

'हूं.........।' जादूगर बड़बड़ाया, इतनी मेहरबानी किसलिये?क्या मैं पूछ सकता हूं कि इसमें से कोई कीमती चीज निकाल तो नहीं ली ?'

'नहीं जनाब। जैसा हमने उसे खरीदा था ठीक वैसा ही है। बात यह है कि संदूक के साथ रहस्य जुड़ा हुआ है। कुछ लोग हाथ धोकर इसके पीछे पड़े हैं। इसे पास रखने में खतरा हो सकता है। मैं तो कहता हूं कि पुलिस को सौंपा जाये इसे।'

'फिजूल की बात है यह बेटे। मुझे कोई खतरा नहीं है। मैं खतरों से निबटना जानता हूं। यह लो दस रुपये और संदूक मेरे हवाले करो।' जादूगर ने अपना लम्बा हाथ बढ़ा हवा में चुटकी बजाई और उसकी अंगुलियों में दस का नोट प्रकट हो गया। नोट राजू की मुट्ठी में ठुंस दिया गया।

'अब संदूक मेरा हो गया' वह बोला, 'कृपया संदूक मेरे हवाले कर दीजिये।'

राजू ने महिन्दर और श्याम से संदूक लाने को कहा। श्याम बोला, अभी लाये हम। कुछ ही मिनटों में दोनों संदूक लेकर आये। जादूगर के कहने पर तीनों ने मिल कर उसे कार के पीछे की सीट पर रखा। वे सब इस काम में इतने मग्न थे कि उन्हें दो व्यक्ति जो दूर से इन सारी गतिविधियों पर नजर रख रहे थे नजर नहीं आये।

जादूगर ने कार स्टार्ट की, जाते-जाते बोला, 'अगली बार मैं शहर में कहीं अपने जादू का शो करूंगा तो तुम तीनों के लिए टिकट भेजुंगा।'

कार आंखों से ओझल हो गयी। श्याम व महिन्दर ने चैन की सांस ली।

श्याम ने कहा, 'गया मनहूस सन्दूक। आशा है जादुगर कोका बोलती खोपड़ी का रहस्य जानने में सफल होगा। बेताल की खोपड़ी उसे ही मुबारिक हो। हमारी तरफ से बेताल को अन्तिम सलाम और जय-हिन्द।'

श्याम को क्या पता था कि आगे क्या होने वाला है!

जादूगर कोका का एक्सीडेंट

संदूक से छुटकारा पाने की महिन्दर तथा श्याम को खुशी थी! लेकिन राजू को दुख था।

उस दिन फिर कोई विशेष घटना नहीं हुयी। श्याम अपने परिवार के साथ अपने किसी रिश्तेदार की शादी में चला गया। महिन्दर अपने माता-पिता के साथ ही रहा। राजू ने अपना समय पुस्तकें पढ़ने में गुजारा।

तीनों की मुलाकात दूसरे दिन स्कूल में हुयी। तीनों हायर सैकेण्डरी के छात्र थे! शाम को हैड क्वार्टर में इकट्ठे होकर आगे का कार्यक्रम तय करने की योजना बनी।

ठीक चार बजे तीनों युवा जासूस गेराज के ऊपर बने क्वार्टर में इकट्ठे हुये। यही उनका हैड क्वार्टर था। राजू बेताल की खोपड़ी तथा अलीबाबा के पत्र पर विचार विमर्श करना चाहता था परन्तु श्याम व महिन्दर इस विषय पर अरुचि दिखा रहे थे। श्याम शादी में हुयी छुट-पुट घटनाओं का ब्यौरा दे रहा था। महिन्दर अपने द्वारा खरीदी नयी कार की तारीफ करने का अवसर खोज रहा था। तभी हैड क्वार्टर के दरवाजे पर दस्तक हुयी। श्याम ने दरवाजा खोला तो इन्सपेक्टर चन्देल खड़े थे।

पुलिस इंसपेक्टर चन्देल तीन युवा जासूसों की प्रतिभा के कायल थे। दो बार तीन जासूसों ने एक केस में उनकी महत्वपूर्ण महायता की थी तभी से वे इन्हें इज्जत की नजर से देखते थे। कानून विरुद्ध काम नहीं हुआ तो जब तब इनकी सहायता भी कर देते थे। पुलिस कमिश्नर के कृपा पात्र होने के कारण प्रायः वे गैर सरकारी मौकों पर भी राजू के घर आया करते थे। तीनों के लिये वह इन्सपेक्टर कम व अंकल ज्यादा थे।

'क्या हाल है जेम्स बॉडो?' उन्होंने मुस्करा कर अन्दर आते हुये कहा, 'आज मैं तुमसे एक सरकारी तफतीश के सिलसिले में कुछ पूछताछ करने आया हूं।'

तीनों ने एक दूसरे की ओर देखा।

'पूछताछ हमसे अंकल?' राजू ने आंखें झपकाते हुये पूछा।

'हां भई।' वह कुर्सी पर बैठे, 'राजू बेटे तुमने जादूगर प्रकाश रंजन कोका को कल एक संदूक बेचा था न? यहां से घर जाते हुये उसकी कार का एक्सीडेंट हो गया। उसकी कार का भर्ता बन गया और उसे गहरी चोटें आई। वह अब भी हस्पताल में है। पहले हमने सोचा यह दुर्घटना है। वह बेहोश था और बोल नहीं सकता था।

'लेकिन आज सुबह उसे होश आया तो उसने बताया कि एक दूसरी कार जिसमें दो व्यक्ति बैठे थे ने जान बूझ कर उसकी कार में टक्कर मारी और सड़क के एक ओर वाली दीवार से भिड़ा दिया। उसने संदूक के बारे में भी बताया। दुर्घटना ग्रस्त कार के मलबे में संदूक नहीं मिला। वे दो व्यक्ति उसे चुरा ले गये।'

'इसका मतलब है...' राजू बोला, 'उन दोनों ने कोका के कार को संदूक चुराने के लिए ही दुर्घटना ग्रस्त किया।'

'हमें भी ऐसा ही लगा।' चन्देल सहमत हुये, 'जादूगर कोका ज्यादा कुछ न बता सका। डाक्टर ने ज्यादा बोलने के लिए मना कर दिया। चूंकि संदूक उसने तुमसे खरीदा था इसलिये मैंने सोचा कि तुमसे ही पूछ लिया जाये कि इतना खतरा मोल लेकर चुराने लायक उस संदूक में क्या था!'

'बात यह है अंकल।' राजू की बात श्याम व महिन्दर बड़े ध्यान से सुनने लगे, 'उसमें ज्यादातर जादूगरों के पहनने वाले भडकीले कपड़े थे। कुछ जादू का सामान था। सबसे महत्वपूर्ण चीज उसमें एक मानव खोपड़ी थी जिसके बारे में कहा जाता है कि वह बोलती थी।'

'खोपड़ी बोलने वाली।' इंसपेक्टर चंदेल उछल पड़े, 'क्या पागलपन वाली बात है। खोपड़ी कहीं बोलेगी?'

'नहीं बोलेगी अंकल।' राजू सहमत हुआ, दरअसल बात यह है कि वह खोपड़ी किसी जादूगर की थी जिसका नाम अलीबाबा दि ग्रेट था...और...।' राजू ने पूरा किस्सा इन्सपेक्टर चंदेल को सुनाया।

चंदेल ने राजू की बातें गौर से सुनीं। बीच-बीच में वह होंठ भी काटते जाते थे।

सारा किस्सा सुनने के बाद चंदेल बोले, 'कहीं न कहीं कहानी में गलत फहमी जरूर हुयी है। शायद दिमाग में बेताल की खोपड़ी का विचार होने के कारण तुम्हें भ्रम हुआ हो कि उस दिन अंधेरे में खोपड़ी तुमसे बोली थी! या सपना देखा होगा।'

'अंकल मैंने इस ऐंगल से भी सोच कर देखा। लेकिन जब बेताल की खोपड़ी द्वारा दिये संदेश के अनुसार राम बाग गया तो वहां बंजारिन रानी मिली जिसे अलीबाबा का ज्ञान था। उसने कहा कि अलीबाबा अब आदमियों की दुनिया में नहीं है।'

इन्सपेक्टर चंदेल ने लम्बी सांस ली और बालों में हाथ फेरा और धीरे-धीरे बोले, 'यह भी सही है। और उसने काले शीशे में देख नोटों के खजाने के बारे में बताया है? बात बड़ी अजीब है। फिर तुमने अलीबाबा को लिखे पत्र का जिक्र किया जिसे तुमने संदूक में वापिस रखा। तुमने उस पत्र की नकल कर रखी है। जरा मुझे दिखाना तो।'

'अभी लीजिये अंकल।' इस बार श्याम बोला! वह उठ कर अलमारी तक गया और एक फायल से उस पत्र की प्रतिलिपि निकाल इन्स्पेक्टर के हाथ में पकड़ा दिया।

चंदेल ने उसे पढ़ा और सिर हिलाया, 'मुझे भी इसमें कोई खास बात नजर नहीं आती। लेकिन मैं फुर्सत में दफ्तर में इसकी जांच करूंगा! श्याम बेटे इसकी एक नकल मेरे लिये भी तैयार कर दो! फिलहाल तो मैं उस भविष्यवाणी करने वाली बंजारिन

रानी से मिलना चाहूंगा। राजू तुम मेरे साथ आओ। मेरे पास मोटर साइकिल है। मेरा दिल कहता है कि वह इस मामलेके बारेमें और काफी कुछ जानती है जो तुम्हें नहीं बताया।'

महिन्दर और श्याम भी उनके साथ जाना चाहते थे परन्तु उन्हें अपना इरादा छोड़ना पड़ा जब महसूस हुआ कि उनकी साइकिलें चन्देल की मोटर साइकिल का साथ नहीं निभा पायेंगी।

रास्ते में चंदेल ने कहा, 'इसे गैर सरकारी पूछताछ समझो! शायद वह कुछ न कुछ बताये। ये बंजारे किसी को अपना पूरा भेद नहीं देते। अधिकतर अपराधी होते हैं। लेकिन रानी ने अब तक कोई कानून नहीं तोड़ा इसलिये हम उसका बिगाड़ भी कुछ नहीं सकते।'

'और थाने लोटने पर सबसे पहले मैं मुख्य कार्यालय से जग्गी की पूरी हिस्ट्री मालूम करूंगा। वही जिसने अलीबाबा को पत्र लिखा है। उससे पता लगेगा कि यह सब कुछ क्या चक्कर है ?'

शीघ्र ही वे रामबाग पहुंच गये! चंदेल ने मोटर साइकिल मैदान से होकर ठीक तम्बुओं के पास रोकी।

मोटर की आवाज सुन निकट के तम्बू से एक बूढ़ी औरत निकली। राजू को कुछ यहां बदला-बदला सा लग रहा था।

चंदेल ने बुढ़िया से पूछा, 'माई हमें बंजारिन रानी से मिलना है।'

बुढ़िया तुतलायी, 'कौन बंदारिन रानी ? हम लोग तो आज ही यहां आये हैं। रादस्थान के कठपुतली वारे हैं। वह बंदारों की टोली तो कल ही यहां से तम्बू उखाड़ कर चली गयी थी। हमें यहां बताया किसी ने।'

'कहां गये वह बजारे ?'

बुढ़िया ने उत्तर दिया, 'लो बोलो। हमें क्या पता ? बंदारों का कहीं ठिकाना होता है ? जिधर मुंह उठाया उधर ही चल पड़े।'

'धत्त् तेरे की।' चंदेल ने हवा में हाथ घुमाया, 'एक ही सूत्र हमारे पास था वह भी हाथ से निकल गया।'

इन्स्पेक्टर चंदेल की चेतावनी

तीनों जासूस अपने परिचित अड्डे पर जमा थे। इन्स्पेक्टर चंदेल से हुई मुलाकात को दो दिन गुजर चुके थे। राजू ने अध्यक्ष के स्वर में कहा, 'तीन जासूसों की मीटिंग शुरू होती है। इसमें भावी योजनाओं पर विचार किया जायेगा! जो कोई सुझाव पेश करना चाहता है कर सकता है।'

महिन्दर बोला, 'मेरा प्रस्ताव है कि आज शाम को कोई पिक्चर देखी जाये! बोलती खोपड़ी के चक्कर से हमारे दिमागों में तनाव भर गया है। यही हाल रहा तो हमारे बाल बीस वर्ष की आयु तक पहुंचने से पहले ही सफेद हो जायेंगे।'

'श्याम ने प्रस्ताव का समर्थन किया, 'मैं प्रस्ताव से पूरी तरह सहमत हूं। हमें अभी जाकर टिकटें ले आनी चाहिए।'

ठीक उसी समय राजू की मां ने राजू को पुकारा।

राजू के लिए टेलीफोन था! राजू ने रिसीवर उठाकर अपने स्वर में रौब लाने की कोशिश करते हुए कहा, 'हैल्लो! तीन जासूस का मैं राजू बोल रहा हूं।

'राजू मैं चंदेल बोल रहा हूं' उधर से आवाज आई, 'मैंने तुम्हें बताया था न कि मैं उस केस के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करूंगा मुझे कुछ नये तथ्य मालूम हुए हैं! तुम जल्दी थाने पहुंचो।'

राजू ने जाकर खबर महिन्दर और श्याम को सुनायी तो उनका मुंह लटक गया 'ओह! हमने चन्देल को वह सब कुछ बता दिया जो हमें पता था! जहां तक मेरा सवाल है सन्दूक और खोपड़ी का मामला खत्म हो चुका है। मुझे अब और कुछ लेना-देना नहींहै।'

'तो फिर ठीक है।' राजू ने कहा, 'तुम लोग नहीं आना चाहते तो मैं ही अकेला चला जाता हूं अब मुझे अकेले ही इस मामले से निबटना पड़ेगा।'

श्याम मुस्कराया! महिन्दर के चेहरे पर अनिश्चितता के भाव थे! सचाई तो यह थी वे मुंह से कितना ही प्रतिरोध करें परन्तु किसी पहेली की भूल भुलैया में पड़ने के रोमांस से स्वयं को रोक न पाते थे।

महिन्दर ने आह भरी, 'चलो तीनों चलो। तीन जासूस हैं तो तीनों को साथ रहना पड़ेगा। शायद वहां से जल्दी छुट्टी मिले।'

तीनों ने अपनी साइकिलें थाने के अहाते में खड़ी कीं, हवलदार ने मुस्करा कर उनका स्वागत किया! वह उनसे परिचित था। 'सीधे अन्दर जाइए! चंदेल साहब आप लोगों की प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

वे इन्स्पेक्टर के कमरे प्रविष्ट हुए। चंदेल कुर्सी पर बैठे धुआं उगल रहे थे।

'बैठो भई।' तीनों बैठ गये। और चन्देल के बोलने की प्रतीक्षा करने लगे।

'देखो भई।' आखिर उन्होंने कहना शुरू किया, 'मुझे इस शख्स जग्गी के बारे में काफी बातें मालूम हुई हैं। उसने और अलीबाबा ने लन्दन में साथ जेल काटी। ऐसा लगता है कि जग्गी बेंक डकैत था।

'बेंक डकैत ?' राजू की आंखें फैल गयीं।

'हां! कुछ वर्ष पूर्व भोपाल में दिन दहाड़े एक बेंक पर डाका पड़ा था! पुलिस को पूरा विश्वास है कि डाके में जग्गी का हाथ था। डाकू कैशियर से सौ-सौ के तीस हजार के नोट लूटकर ले गया था। इससे पहले कि पुलिस उसे पकड़ पाती वह जाली पास-पोर्ट बनाकर इंगलेंड भागने में सफल हो गया। वहां एक कार चुराने के जुर्म में उसे सात वर्ष की सजा हुई। भारत ने बेंक डकैती केस में उस पर मुकदमा चलाने के लिए भारत भेजे जाने का ईंगलेंड की सरकार से अनुरोध किया! लेकिन उन्होंने तर्क दिया कि पहले वह वहां किये जुर्म की सजा भुगत ले फिर उसे भारतीय अधिकारियों को सौंप दिया जायेगा। बात यहीं लटक गई! यहां काम की बात यह है कि जग्गी वह लूट के पैसे न ले जा सका परन्तु पुलिस भी उसका पता न लगा सकी। वह तीस

शेष पृष्ठ ३२ पर

आदिमयुग
GNNNNNNNNN!
तुम्हारी गुफा से यह कैसी भयानक आवाज आ रही है ? लगता है टायनासॉरस का भतीजा धनाना सॉरस घुस गया है गुफा में अब क्या करोगे ?
यह घनानासॉरस नहीं है। यह तो जनाना सारस है।
इस नाम के दैत्य के बारे में तो आज तक कभी मैंने नहीं सुना।
जनाना सारस यानि मेरी बीबी।
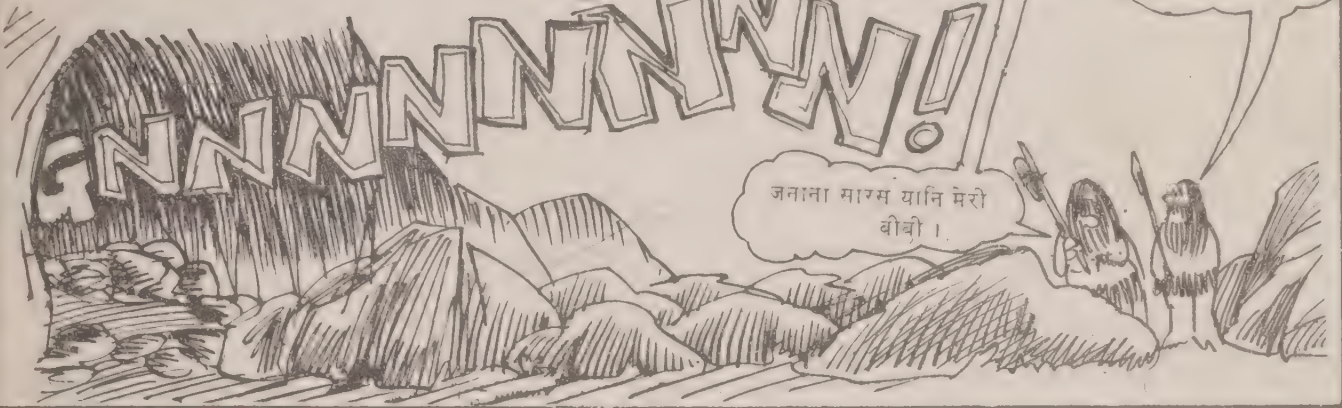
मेरी फैमिली लाइफ बहुत खराब हो गयी है। अपनी गुफा में दिन भर के शिकार से थका हारा जाता हूं तो शान्ति मिलनी तो दूर उल्टे बीबी काट खाने को दौड़ती है यह देखो कल ही उसने मेरी यह अंगुली काट खाई।
हस्बैंड और वाइफ में अडरस्टैंडिंग न हो तो बहुत मुश्किल होती है।
जिन्दगी नर्क बन गयी है। अब मैं गुफा में थोड़े ही घुस सकता हूं ? चल बेटा वहीं जहां गम के मारे जाते हैं।
तुम्हारा क्या मतलब है कितुम गुफा में नहीं जाओगे ? शाम होने वाली है। चारों तरफ टोटो सारस घूम रहे है अब इस वक्त अपने घर नहीं जाओगे तो और कहां जाओगे ?
मरना है मुझे अपनी गुफा में जाकर। घर के नर्क से बचने के लिए मैं कहां जाता हूं यह तुझे अभी पता लग जायेगा। वहीं ले चल रहा हूं तुझे भी।

यहीं आ जाता हूं भइये मैं अपना गम गलत करने।
इसको पीते ही सिर हल्का हो गया,क्या है यह ?
बस किसी देवता की देन समझो। यह किसी को पता नहीं यह क्या है ? बस ठेकेदार कन्द मूल आदि फल पेड़ की खोह में डाल देता है। वहां सड़कर यह अमृत बन जाता है। उसमें से यह निकाल-निकालकर लोगों को पिलाये जाता है। हिच
अब बस करें ?
नहीं। एक-एक और ! बस थोड़ी सी।
ठेका शराब देसी

फैण्टम और जंगल शहर
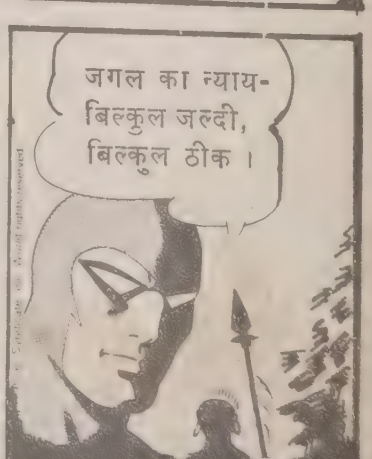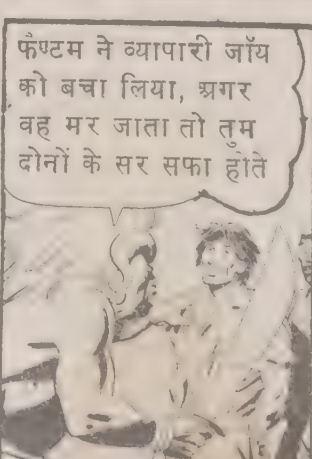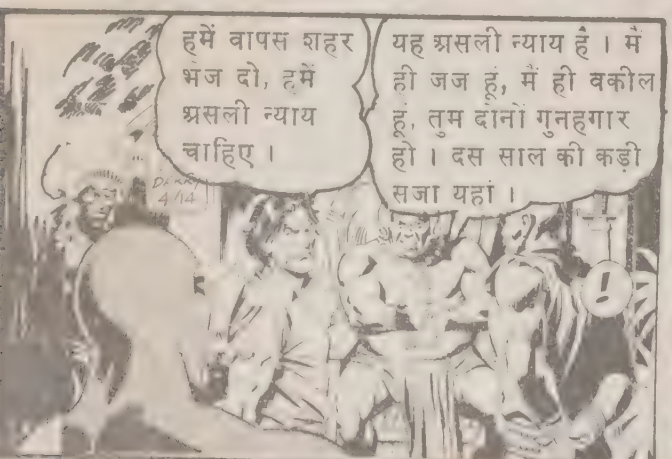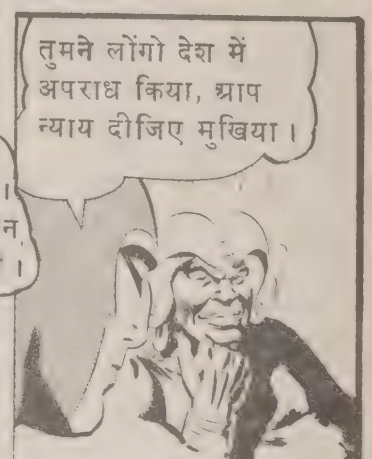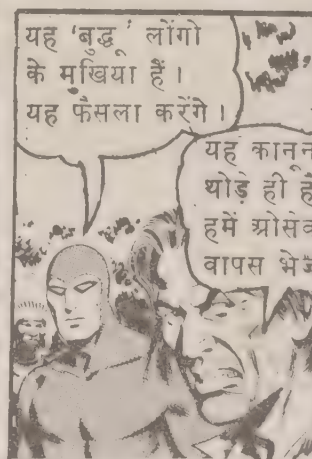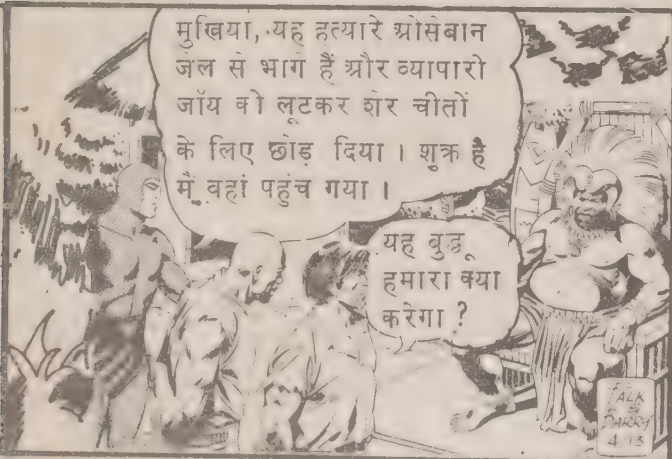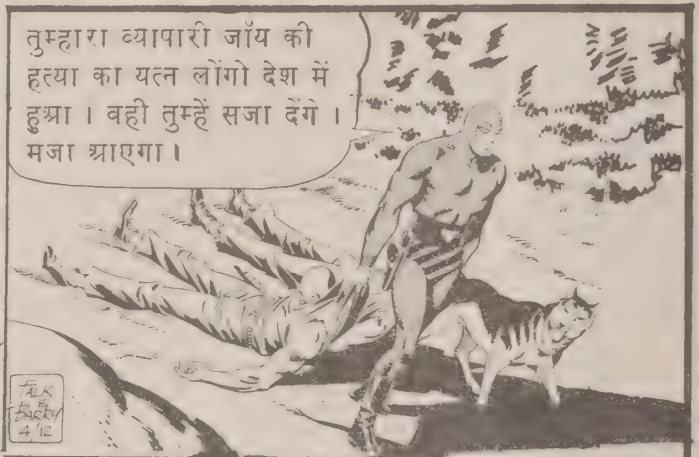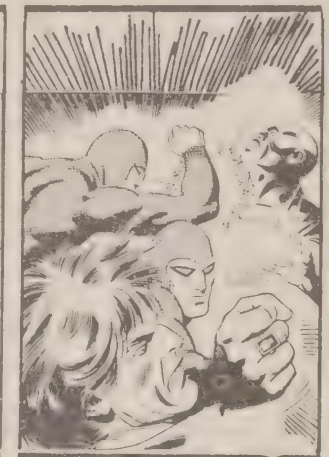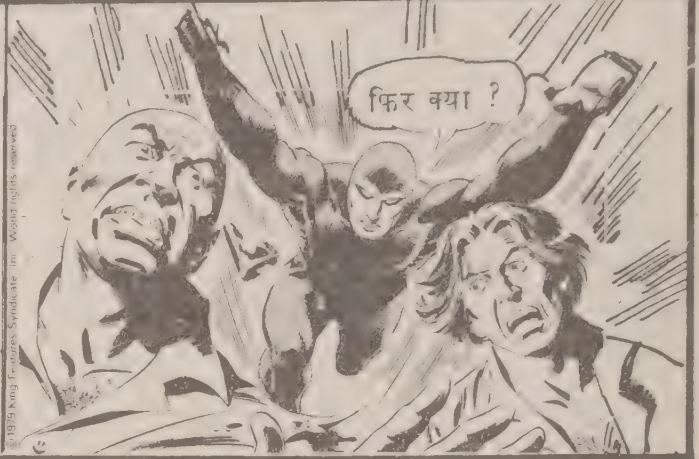
उन दोनों लुटेरों को दस साल की कड़ी सजा मिली है ।
ठीक है । और तुम मेरे दोनों खच्चर वापिस ले आये । तुम ठीक हो न मेरे प्यारे ।
© 1979 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved

तुमने मेरी इतनी मदद करी…मैं तुम्हारा कैसे शुक्रिया अदा करूं ?
करने की जरूरत नहीं ।

बच्चा कैसा है ?
खूब उछल रहा है ।

तुम्हीं मारो रेक्स । अब…
कुछ हफ्तों तक फण्टम और रेक्स घने जंगल में शिकार करते हैं ।

बिल्कुल निशाने पर । शाबाश !

बड़ा वाला रेक्स ने मारा
मूंगा, मूंगा…
मूंगा ! मैं जानती हूं, इसका मतलब है मीट ।

हमने अभी तक बच्चे के लिए नाम नहीं सोचा ।
सोचना क्या है ? हम सबका नाम किट है । जैसा कि पहले फैण्टम का था ।
खोपड़ी गुफा मे कई हफ्ते बीतते हैं ।

क्यों न कोई दूसरा नाम रखें…अच्छा रहेगा न ?
तुम्हारा मतलब…किट नहीं ?

ओ डार्लिंग, मैं तो मजाक कर रही थी । मैं रीति को तोड़ने वाली थोड़े ही हूं । अगर लड़की हुई तो ?
जो भी तुम नाम चाहो, मगर होगा लड़का ही ।

फैण्टम की बीस पीढ़ियां यहां दफ-नाई गई हैं ।
कई हफ्ते बाद डियाना खोपड़ी गुफा के खजाने में ।

सोना…हीरे…जवाहरात…रूबियां !
इन सबको ठीक से रखना है ।
फण्टम का "छोटा" खजाना

सिकन्दर महान का हीरे का प्याला…राजा आर्थर की तलवार…राजा री रोलेण्ड का सींग का बाजा ।
फैण्टम का "बड़ा" खजाना ।

बूगा···
कूगा···
बूगा··· प्याला। कूगा··· मुर्गी।
हफ्ते बीतते हैं, डियाना बन्दर भाषा सीखती है।
बूढ़े दादा मोज, क्या तुम्हें फैण्टम का पूरा इतिहास याद है ?
हां, मैं सब जानता हूं।

हमें बहुत खुशी है कि तुम बच्चे को खोपड़ी गुफा में जन्म दोगी।
गुफा की बात करते हुए याद आया, मुझे वहीं ले चलो, जल्दी।
?!

डियाना तुम ठीक हो न।
हां···कुछ अजीब सा लग रहा है।
यहां बैठ कर बच्चे को जन्म देना अजीब नहीं लगेगा क्या ?

डार्लिंग मुझे गुफा में ले जाओ, मेरी तबियत ठीक नहीं है।
!
?

डार्लिंग, मैं चल सकती हूं।
डियाना मैं तुम्हें उठाकर ले जाना अच्छा समझता हूं।
गुरा मोका डियाना के बच्चा होने वाला है, गर्म पानी लाओ
?!

डियाना तुम्हारा कमरा तैयार है।
यहां, कब्रिस्तान में ?
मेरा विचार है कि तुम्हारे पूर्वजों को पता लगे कि नया फैण्टम भी उनके पद चिन्हों पर चल रहा है।

यह कोई थोडी देर की बात नहीं है। बच्चा होने में समय लगेगा डार्लिंग।
क्या बात है डियाना ?
कोई खतरा नहीं है, अच्छा होगा यदि आप बाहर आराम करें ओ चलते-फिरते भूत।

बैठ जाओ और आराम करो, ओ चलते-फिरते भूत।
मैं इन्तजार नहीं कर सकता।

क्रमशः

प्र० : अन्तरिक्ष में गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी के समान ही क्यों नहीं ?

उ० : अन्तरिक्ष में होने वाला हर पिण्ड या तत्व हर एक-दूसरे को आकर्षित करता रहता है। इस गुरुत्वाकर्षण या घनत्व कहते हैं परन्तु ये गुरुत्व आकर्षण शक्ति दो बातों पर निर्भर होती है।

पहली बात है कि किसी पिण्ड में कितना तत्व है। एक पिण्ड या आबजैक्ट में उतनी ही अधिक आकर्षण शक्ति होती है जितनी अधिक उसके तत्व की मात्रा होती है। इसी प्रकार छोटे तत्वों की आकर्षण शक्ति उनकी राशि के अनुपात से कम हो जाती है। उदाहरण के लिये पृथ्वी में चंद्रमा से अधिक तत्व हैं, इसी कारण पृथ्वी की आकर्षण शक्ति, चंद्रमा की आकर्षण शक्ति से अधिक शक्तिशाली है।

दूसरी बात जिस पर गुरुत्वाकर्षण निर्भर है वह है पिण्डों या तत्व की एक-दूसरे से दूरी। दो करीब के पिण्डों में आपसी आकर्षण शक्ति अधिक है परन्तु अधिक दूरी पर स्थित दो पिण्डों में काफी कम होती है इसका उदाहरण पृथ्वी पर के मानव को लेकर दे सकते हैं। मानव की तुलना में पृथ्वी में कहीं अधिक तत्व है, इसी कारण पृथ्वी की आकर्षण शक्ति मानव को अपनी ओर खींचे रखती है। परन्तु पृथ्वी के बर्ताव से ऐसा प्रतीत होता है कि इसका सारा तत्व इसके मध्य में ही स्थित है और इसी कारण पृथ्वी की आकर्षण शक्ति पृथ्वी के मध्य से दूरी पर भी निर्भर है उदाहरण के लिये समुद्रतट पर पर्वत की चोटी की तुलना में कहीं अधिक गुरुत्वाकर्षण है। मान लो कोई व्यक्ति पृथ्वी से दूर ऊपर हवा में चला जाता है तो पृथ्वी की आकर्षण शक्ति घटती जाती है और जब मनुष्य अन्तरिक्ष में जाता है तो वह पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति क्षेत्र से बाहर हो जाता है तथा फिर उस पर पृथ्वी का कोई खिंचाव नहीं रहता और वह भार रहित स्थिति में पहुँच जाता है। इसी कारण राकेट तथा अन्तरिक्ष में जाने वाले कंप्स्यूल में भार रहित अन्तरिक्ष यात्री और सामान हवा में तैरते रहते हैं।

प्र०: चीड़ के वृक्ष सदा हरे कैसे रहते हैं तथा अन्य वृक्षों के समान कभी भी बिना पत्तियों के क्यों दिखाई नहीं देते ?

उ०: वृक्ष की पत्तियों के कई कार्य होते हैं, इनमें भोजन बनाना मुख्य है। पत्तियां वायु से कारबन-डाई ओक्साईड तथा जल व खनिज पदार्थ धरती से प्राप्त करती हैं। पत्तियों की क्लोरोफिल सूर्य की ऊर्जा सोख लेती है। सूर्य की ऊर्जा से शक्ति प्राप्त कर पत्तियों की क्लोरोफिल कारबन-डाई ओक्साईड तथा जल को चीनी में परिवर्तित कर लेती है। पत्तियों द्वारा बनाई ये चीनी हीं वृक्षों का मुख्य भोजन होती है। पत्तियों द्वारा ही वृक्ष के भीतर का अधिकांश पानी, पत्तियों के सहस्त्रों छोटे-छोटे छिद्रों से भाप बनकर उड़ जाता है। वृक्ष द्वारा पृथ्वी से लिये गये पानी का बहुत थोड़ा भाग ही भोजन बनता है शेष सब ही उड़ जाता है।

संसार के बर्फ पड़ने वाले देशों में जहां शीतकाल में काफी मात्रा में हिमपात होता है। ऐसे मौसम में वृक्षों को धरती से उतना पानी प्राप्त नहीं हो पाता जितने कि उन्हें आवश्यकता होती है, ऐसे मौसम में वृक्ष पत्तियों के छिद्रों से नष्ट होने वाले पानी को नष्ट होने से बचा लेते हैं। अधिकांश वृक्ष ऐसे करने के लिए अपने पत्तों को गिरा देते हैं। परन्तु चीड़, फर इत्यादि वृक्षों की बनावट ही भिन्न होती है, इनकी पत्तियां सुइयों के समान लम्बी-लम्बी होती हैं तथा इन पर एक मोमिया तह रहती है, इससे इन वृक्षों के भीतर का पानी उड़ कर नष्ट नहीं हो पाता तथा इन वृक्षों की पत्तियां निरन्तर कई वर्ष तक लगी रहती हैं। इन वृक्षों की पत्तियां जब भी झड़ती हैं तभी तुरन्त नई पत्तियां निकल आती हैं, तथा वृक्षों की शाखा कभी भी बिना पत्तियों के दिखाई नहीं देतीं। इसी कारण ये वृक्ष सदा हरे रहने वाले कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ चौड़े पत्तों के वृक्ष भी सदा हरे रहते हैं, इन वृक्षों के पत्ते चमड़े के समान मोटे होते हैं, जिससे सर्दी के महीनों में इनसे वृक्षों की अधिक नमी नष्ट नहीं हो पाती तथा ये भी चीड़ इत्यादि के समान बहुत कम झड़ते हैं।

प्र० : इटली की "पीसा की झुकी हुई मीनार" या "लीनिंग टावर आफ पीसा" कितनी ऊँची है ?

उ० : इटली में बनी ये पीसा की मीनार यदि झुकी हुई न भी होती तो भी एक बहुत ही अद्भुत इमारत होती। ये पूरी की पूरी मीनार सफेद संगमरमर की बनी हुई है। नींव पर इसकी दीवारें १३ फीट मोटी हैं, इसमें आठ मंजिल हैं तथा इसकी ऊंचाई १४६ फीट है, ये ऊँचाई हमारे देश में लगभग पन्द्रह मंजिल ऊँची इमारत जितनी होती है।

इसमें सीढ़ी दीवार के भीतर को बनी है जिसमें ३०० पैड़ी हैं। जो व्यक्ति इन सीढ़ियों द्वारा मीनार की चोटी तक चढ़ते हैं वो इटली के शहर तथा छः मील दूर समुद्र का भव्य दृश्य देखते हैं। चोटी पर ये मीनार अविलम्ब से १६ $\frac{1}{2}$ फीट बाहर है, दूसरे शब्दों में मीनार १६ $\frac{1}{2}$ फीट झुकी हुई है। यदि आप मीनार की चोटी पर खड़े होकर धरती पर सीधा पत्थर फेंकें तो वो इस मीनार के तले से १६ $\frac{1}{2}$ फीट हट कर गिरेगा। ये मीनार झुकी कैसे, इसका पता वास्तविक रूप से किसी को भी नहीं है, परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि बनाते समय बनाने वालों का एक-एक सीधी मीनार बनाने का ही विचार था। वास्तव में ये मीनार निकट ही स्थित गिरजाघर के लिए

घंटा बजाने की मीनार के रूप में निर्मित की गई थी। इस मीनार का निर्माण ११७४ सन् में आरम्भ हुआ तथा १३५० में इसका कार्य समाप्त हुआ।

इस मीनार की नींव रेत में रखी गई थी और सम्भव है यही इसके झुकने का कारण भी होगा। इस मीनार का एक ओर को झुकना एकदम आकस्मिक नहीं था। जब इस मीनार की केवल तीन ही मंजिलें बनी थीं तभी से ये एक ओर को झुकने लगी। ऐसा देखकर बनाने वालों ने इसके नक्शों में मामूली सी तबदीली की, परन्तु मीनार का कार्य ज्यों का त्यों चलता रहा। पिछले सौ वर्ष में भी ये मीनार एक फुट नीचे को ओर झुक गई है। इन्जीनियरों का मत है कि इस मीनार को "झुकी हुई मीनार" के बजाय "गिरती हुई मीनार" कहना चाहिए क्योंकि अंत में ये अवश्य ही गिर कर टूट जायेगी।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सिलबिल पिलपिल
आटो मेशन
क्रेश प्रोग्राम
चूहे हम जो कर रहे हैं ठीक है ? क्या सुपरमैन के रूप में असफल होने का यही कारण था ?
और क्या ? आजकल साइंस का जमाना है। टैक्नोलाजी का युग है। आसमान में पंखों के सहारे उड़ने वाले, मुक्का मार कर हाथी को गिराने वाले सुपरमैनों पर अब लोग यकीन नहीं करते। इसीलिए हमने सुपरमैन सिलबिल के आटोमेशन का प्रोग्राम बनाया है। मशीनों से लैस सुपरमैन देख लोगों को तेरी शक्ति पर तुरन्त विश्वास आयेगा।
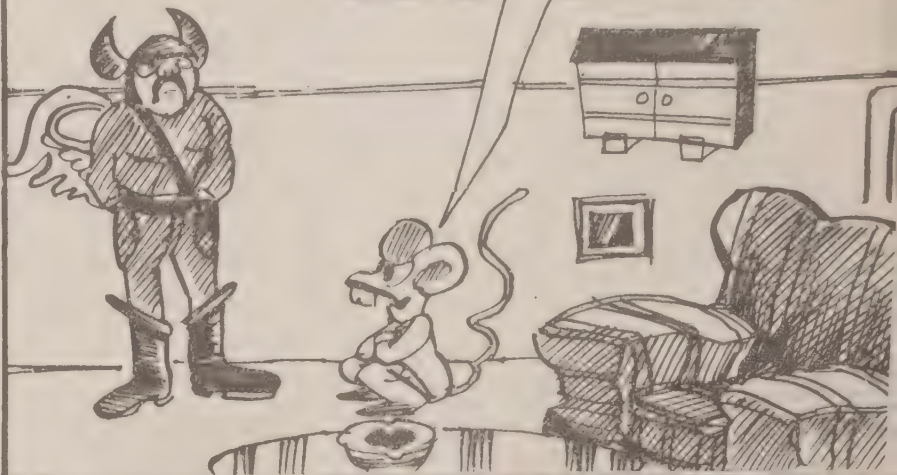
पहले हम अपने याड़ी दीवाना के पाठकों को सुपरमैन के लिए जो मशीनें खरीद लाये हैं उनका परिचय देंगे। पाठक लोग इसका जिक्र अपने दोस्तों से करेंगे और इस तरह मुफ्त में हमें पब्लिसिटी मिल जाएगी। इनको भी यकीन आ जायेगा कि सिलबिल कोई लल्लू सुपरमैन नहीं है। तो···भाइयों और बहनों सिलबिल ने पीठ पर जो पहन रखा है वह कोई गोबर गैस प्लांट नहीं है। यह जम्प जैट है। बटन दबाते ही सिलबिल हवा में उड़ सकता है। जेम्ज बांड थंडरबाल में यही पहनकर दुश्मन के किले से उड़कर बच निकला था···।
जामा मस्जिद का कबाड़ी है ये ?

थमने भारत के दूर मारक हवाई जहाज जैगुआर का नाम तो सुना ही होगा। इस जैट फाइटर बाम्बर में जो जैट की टैक्नीक अपनाई गई है वही सिलबिल के पिट्ठू जम्प जैट में है। इसमें चार मिनट तक उड़ने का मसाला भरा है। इस जम्प जैट के सहारे सिल-बिल ६०० फुट तक की ऊंचाई तक उड़ सकता है। इसे पीठ पर पहनने के लिए वैसे ही स्ट्राप लगे हैं जैसे पिट्ठू बैग में होते हैं। बटन दबा कर ऊपर-नीचे अथवा दायें-बायें इच्छा-नुसार जाया जा सकता है। यह हमने जेम्ज बांड सीरीज बनाने वाली फिल्म कम्पनी से पांच सौ डालर में खरीदा है। थम अपने दोस्तों को इसकी कीमत पचास हजार डालर से कम न बताना।

ग्रौर यह सुपर सिलबिल का टॉप सीक्रेट सिगरेट लाइटर है। इसे ध्यान से देखो, इसमें रेडियो रिसीवर मौर ट्रांसमिटर फिट हैं। हमने थमको अच्छी तरह समझाने के लिए लाइटर खोलकर दिखाया है। लाइटर फोन है। यह एक छोटे से सैल से चलता है। सुनने के लिए दायीं ओर ईयर प्लग भी है जो अलग किया जा सकता है। एरियल फोल्ड करने पर लाइटर के भीतर ही छिप जाता है। लाइटर के बीच में एक बम भी फिट है जो जरूरत पड़ने पर···
ही ही ही ही ही···।

ग्रौर यह ब्रीफ केस देख लो। कितनी कारीगरी करी गयी है। यह केस किसी की भी छुट्टी कर सकता। इसमें इंजेक्शन की सुई केस से एक ग्रोर से तिरछी बाहर को निकली रहेगी। सीरिंज में खतरनाक जहर भरा होगा। यह बिजली के एक उपकरण से चलेगा जो पर्स पैक्स प्लेट के उल्टी ग्रोर लगा है। जब केस के हैंडल के साथ लगा बटन दबाया जाता है तो यह उपकरण कार्बन डाईआक्साइड गैस छोड़ता है। हाथ के साथ लगे दो सिलेंडरों से गैस की प्रैशर सुई को जोर से ग्रागे धकेलता है ग्रौर जहर इन्जेक्ट करता है। भीड़ वाली जगह में ग्रपने शत्रु के पास से जाते हुए गलती से केस टकराने का बहाना ग्रौर···राम नाम सत्त है।

ग्रौर यह मेरा कैमरा रहा। देखने में यह साधारण कैमरा लगता है जैसे कि ग्राम टूरिस्टों के पास होता है, लेकिन सुपरमैन कैमरे के ग्रन्दर भी सुपर कारीगरी भरी हुयी है। कैमरे के भीतर एक जगह गुप्त टेपरिकार्डर फिट है। फोटो खींचने का बहाना करके मैं ग्रासपास के लोगों की ग्रावाज टेप कर सकता हूं। ग्रगर कभी मैं तुम्हारे नजदीक कैमरा लेकर खड़ा नजर आऊँ तो किसी की बुराई की बात मत करना वर्ना जिसकी बुराई की जा रही है मैं बाद में जाकर उसे बता दूंगा ग्रौर थमारी पिटाई होगी।
पिटने दे।

ग्रब इसके बाद जो ग्राप देख रहे हैं वह मिनियेचर सेंसर है । यह इतना छोटा है कि सिलबिल के दायें नथुने के ग्रन्दर ग्राराम से फिट किया जा सकेगा। हवा आने-जाने के लिए एक ग्रोर से इसमें छेद होगा, इस सेंसर की मदद से इसे पता लगेगा कि कौन सा ग्रादमी किस साबुन से नहाता है । कौन लड़की कौन सा टैल्कम पाउडर छिड़क कर आई है । मुहल्ले में किसके घर में देसी घी से खाना बन रहा है । कौन सेम की फलियों का ग्रचार लगा रही है । कौन मिलिट्री की रम पी रहा है और कौन स्कॉच व्हिस्की पी रहा है। इसके नथुने से कोई बात छिपी नहीं रहेगी । यह पसीने की दुर्गंध को रोकेगा जिससे बसों में गर्मियों में सफर करने में इसे बोत ग्रासानी रहेगी ।
यह सूंघ कर भविष्य व भूत का हाल बतायेगा ।
ग्रोर साथियों ग्राप चित्र के दायें कोने पर एक चमकदार कैप्सूल जो देख रहे हैं, यह एक इलैक्ट्रानिक गैजेट है । इसमें ग्रागे की ग्रोर भयंकर विस्फोटक पदार्थ भरे हैं । यह कैप्सूल वास्तव में बहुत छोटा होता है। इस कैप्सूल को हमने ग्रपने चूहे गरीब, चन्द की पूंछ का ग्रापरेशन कर उसमें रख दिया है । इसकी पूंछ में यह जो उभरी हुयी जगह दिखायी दे रही है वह कैप्सूल के कोरण है । वक्त पड़ने पर अगर यह ग्रपनी पूंछ फर्श पर पटक देगा तो एक भयानक धमाका होगा । पांच फीट के व्यास के अन्दर जो कोई ग्रादमी या जानवर खड़ा होगा वह धक्के से दस कदम दूर जा गिरेगा । ग्रब हमारे चूहे से थम सावधानी से पेश ग्राना ।
हियर फ्रेंडस, यह सिलबिल के पेट का ग्रन्दर का नजारा है । हमने ग्रापरेशन करके इसकी अंतड़ियां निकाल कर उसकी जगह स्टेन लैस स्टील के पाइप कंडेंसर ग्रोर परकोलेटर ग्राइंडर फिट कर दिए हैं । ग्रब यह सुपरमैन कितना भी भारी खाना क्यों न खाये इसे बदहजमी नहीं होगी क्योंकि १०० प्रतिशत फिट रहने के लिए सुपरमैन का पेट ठीक रहना बहुत जरूरी है ।

पिलपिल सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़ें।
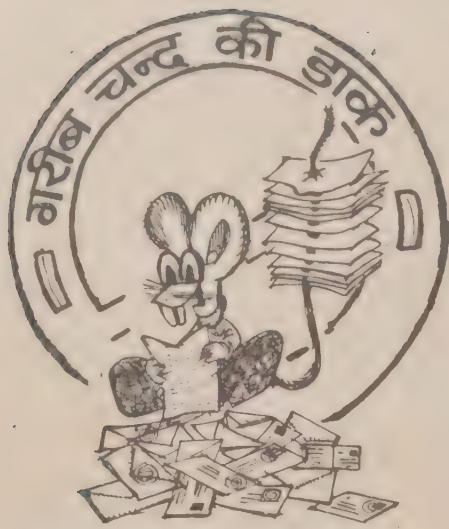
केवल प्रसाद दुआ—काशीपुर : नेता जहां भी जाते हैं, इन पर ईंट, पत्थर, अण्डे, टमाटर लानतें फटकारें और न जाने क्या-क्या पड़ता है, पर इनकी सेहत पर कोई असर नहीं पड़ता, यह फिर नई सभाओं में सज-धज कर मुस्कराते हुए पहुंच जाते हैं ?

उ० : यह चीजें नेताओं के लिए टॉनिक हैं। आशिक और नेता ये दो जीव इन्हीं से खाकर दूसरों को पटखनियां खिलाते हैं।

बजरंग शर्मा—गंगानगर : गरीब चन्द जी, आप के पास सब कुछ है फिर आप गरीब कैसे हो गए ?

उ० : आप बजरंग होते हुए भी शर्मा कैसे हो गए ? आपको तो बजरंग बली होना चाहिए था।

मुरलीधर बजाज—बिलासपुर : गरीबचन्द जी, दूध, मछली तथा चूहे तीनों वस्तु में बिल्ली कौन सी वस्तु पसन्द करती है।

उ० : जो उसके सामने हो। बिल्ली को खाने से पहले मीनू पढ़ने की आदत नहीं होती क्योंकि बेचारी अनपढ़ है।

प्रवीन कुमार सब्रवाल 'पप्पू'—देहरादून : भविष्य में अन्तरिक्ष पर जाने का आपका क्या विचार है ?

उ० : हम तो जा चुके हैं सबसे पहले ! आप अपनी बात कीजिये।

संजय सुरेमा—कटनी : गरीब चन्द जी, मैं एक लड़की से बेहद प्यार करता हूं। क्या वह भी मुझसे उतना ही प्यार करती होगी जितना मैं उससे करता हूं।

उ० : एक आध छटांक का फर्क तो होगा ही।

एम० एस० गुजराल—करनाल : गरीब चन्द जी वैसे तो आप सिलबिल-पिलपिल को बड़े काम की बातें बताते हैं परन्तु जब उनको जूते पड़ने की बारी आती है तो आप उस वक्त उनके करीब नजर नहीं आते। क्या बात है, उस वक्त कौन सी बिल में घुस जाते हैं ?

उ० : उनकी खोपड़ी पर जूते पड़ने से कोई खास नुकसान नहीं होता क्योंकि उनकी खोपड़ियों में अन्दर कुछ नहीं रखा है। मुझे भागना इसलिए पड़ता है कहीं मेरी खोपड़ी में चोट न पहुँचे। उसके अन्दर रखी मगजी से ही हम तीनों का काम चलता है।

अनिल गुरबक्षाणी—रायपुर : मेरे परदादा 'इन्जीनियर' मेरे भाई 'बैंकर' और मैं बेरोजगार हूँ। ऐसा क्यों ?

उ० : आपके खानदान में शायद वैराइटी शो का प्रोग्राम चल रहा है।

योगेश संघवी जैन—बेरमो : गरीब चन्द जी स्त्री फूल जैसी कोमल है तो पुरुष ?

उ० : (फूल) जैसा (सोफ्ट टच) मांगते ही पैसे देने वाला।

प्र० : चेहरे पर प्रेम है वह कैसे मालूम होगा ?

उ० : जब आदमी का चेहरा उल्लू सा नजर आये।

नरेश कुमार चौहान—झरिया : गरीब चन्द जी, आप की पूंछ कितने इंच लम्बी है ?

उ० : आपका इरादा मेरी पूंछ के लिए सोने की छत्री बनाने का तो नहीं है ?

केवल प्रकाश—काशीपुर : अगर पशु पक्षी भी हथियार चलाना व बनाना जानते होते तब क्या होता ?

उ० : आप अपना पत्र न लिख पाते। क्योंकि मेरे हाथ में पिस्तौल होती और आपके दोनों हाथ खड़े होते।

अनिल कुमार 'अटरु'—चौमहला : गरीब चंद जी, आपकी जाति के लोग महीने भर का सारा राशन साफ कर जाते हैं। कृपया कोई उपाय अवश्य बतायें।

उ० : आपके सामने महाराणा प्रताप का उदाहरण है। आप घास की रोटियां खाइये।

मुकेश भटनागर 'डॉन'—कि० चित्तौड़गढ़ : गरीब चन्द जी, जो लड़की बहुत सुन्दर होती है वो लड़की अपने आपको समझती क्या है ?

उ० : और जो भी समझती है एक बात तो पक्की है कि वह आपको अपने लायक नहीं समझती।

राकेश कुमार 'लायन'—सितारगंज : प्यार किया जाता है या प्यार हो जाता है।

उ० : आज के जमाने में प्यार की दोनों ही क्वालिटियां मिलती हैं। आपको कौन सी चाहिए ?

जयराज परचानी—खण्डवा : प्रिय गरीब चन्द जी, हमारी बिल्ली अमीरन आपसे मिलना चाहती है, कृपया मिलने का समय दें।

उ० : मिलने के एपाइंटमैंट के लिए आपकी बिल्ली को खुद मेरे प्राइवेट सैक्रैट्री मि० बुलडॉग से मिलना पड़ेगा।

अनिल दुर्गा 'सिकन्दर'—रायपुर : गरीब चंद जी, आप मेरी शादी पर कौन सा नृत्य करना पसन्द करेंगे ?

उ० : यह तो आपकी बारात के बैंड वालों पर निर्भर करता है कि वह कौन सी टयून बजाते हैं। "हम आज अपनी मौत का सामान ले चले।" या 'शहीदों की चिता पर लगेंगे हर बरस मेले।"

विजय सिंह—पौढ़ी गढ़वाल : डियर गरीब चन्द जी। प्रेम और प्यार में क्या अन्तर है ?

उ० : वही जो मीराबाई और हीराबाई में है।

अभय कुमार बड़कल—बीना, म० प्र० : 'आप अधिकांश प्रश्नों के उत्तर घुमा फिरा कर क्यों देते हैं ?

उ० : बेटा पत्रों के उत्तर देना बहुत टेढ़ी खीर है।

आशा सहाय—चित्रगुप्त नगर, पटना : गरीब चन्द जी, आपके बिरादरी वाले ने मुझे परेशान कर रखा है। मेरी अर्थशास्त्र की पूरी किताब कुतर कर रख डाली है। आप उन्हें समझाते क्यों नहीं।

उ० : आप खामखाह परेशान न हों। अर्थशास्त्र की किताब पढ़कर ही आपने कौन सा मुद्रास्फीती या तेल संकट का हल खोज निकालना था ?

चन्द्रभान 'अनाड़ी'—जबलपुर : गरीब चन्द जी, मुझे थोड़ी सी अक्ल की जरूरत है। क्या आपके पास है ?

उ० : है तो सही लेकिन सेकिंड हैंड है। आप किसी नेता से मांगिये। उनकी अक्ल अच्छी, फ्रैश पायेंगे। जैसे अभी फैक्ट्री से निकल कर आई हो। क्योंकि वे कभी उसका इस्तेमाल नहीं कर पाते।

उमेश ज्ञान चन्दाँनी—नागपुर : डीयर, सुना है कि हमारे पत्र शामिल करने हेतु आप घूस लेने लगे हैं। क्या यह सच है ?

उ० : हां, जैसे आपने तो अपने कार्ड के साथ सोने की जरी का पटका भेजा था।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

यदि ऐसा होता

—श्री कृष्ण

किसी जंगल में तीन सखियां—एक हंसिनी, एक मुर्गी और एक बतख रहती थीं। तीनों अपने को बहुत अधिक बुद्धिमान समझती थीं। उन्हें अपनी दशा पर तनिक भी सन्तोष नहीं था।

बतख कहती—'अरी, क्या बताऊं, विधाता के अनाड़ीपन पर बेहद गुस्सा आता है। भला बता तो मेरा शरीर तो इतना सुन्दर बना दिया पर पंजों का नाश पीट दिया, तेजी से दौड़ भी नहीं सकती। चिपटे झिल्ली दार पंजे। ऊंह! यह भी कोई पैर-में-पैर हैं। जान पड़ता है, उनका सांचा ही बिगड़ गया था। लेकिन बगुले जी के पैर...अहा, उनके लम्बे लम्बे पतले पैर कितने सुन्दर लगते हैं। अगर मेरे पैर भी वैसे ही होते तो कितना अच्छा होता!'

मुर्गी कहती—'अरी, जी में तो ऐसा आता है कि यदि मुझे विधाता मिल जाएं तो खूब आड़े हाथों लूं। रूप-रंग तो दिया ऐसा लुभावना, पर बोली दी गंवारों जैसी कुकड़ूं कूं—कुकड़ूं कूं। अकेले रूप को क्या चाटूं! सच कहती हूं, जब कोई गाने के लिए कहता है तो शरम के मारे धरती में गड़ जाती हूं, भला इस फटे बांस की सी आवाज से कैसे गाऊं? अहा! सितार की बोली कितनी प्यारी होती है, कितनी मीठी! अगर मेरी बोली भी सितार की-सी होती तो कितना अच्छा होता!'

अन्त में हंसनी कहती, 'बहनों तुमने तो अपना-अपना दुखड़ा रो लिया, अब मेरी भी सुनो। मेरे साथ तो विधाता ने बहुत ही जुल्म किया है देखो तो, विधाता ने मेरी देह पर कितने रोएं लाद दिये हैं। मैं पूछती हूं, क्या लाभ है इनका? मेरे लिए तो ये बोझ है। इसके सिवाय इनसे मुझे तकलीफ भी होती है जो भी मनुष्य मुझे देखता है, पकड़ कर मेरे शरीर में से बहुत से रोएं नोच लेता है। उफ; उस समय मुझे कितना कष्ट होता है, मैं क्या कहूं; मैं तो विधाता को खूब कोसा करती हू। अगर ये रोएं मेरे शरीर पर नहीं रहते तो कितना अच्छा होता।'

तीनों सखियां प्रतिदिन इसी तरह विधाता को कोसती रहतीं।

एक बार विधाता दुनिया की सैर के लिए निकले। जब उन्होंने तीनों सखियों की बातें सुनीं तो हंसकर बोले, 'तुम तीनों कल सवेरे सूरज निकलने से पहले पूरब की ओर मुंह करके खड़ी हो जाना और आंखें मूंदकर जो इच्छा हो कह देना। तुम जैसा चाहोगी, वैसा ही हो जायगा।'

यह सुनकर तीनों सखियां खुशी के मारे फूली न समायीं। जैसे-तैसे करके उन्होंने दिन बिताया और ज्योंही दूसरे दिन सुबह हुई, तो आंखें मूंदकर पूरब की ओर मुह करके खड़ी हो गयीं।

और जब उन्होंने आंखें खोलीं तो देखा कि उनकी इच्छाएं पूरी हो गयी हैं।

हंसिनी अपने शरीर पर के सारे रोएं गायब देख खुशी से कूदने लगी, मुर्गी खुशी के मारे चीख उठी और बतख अपने लम्बे पतले पैरों को देखकर खुशी से फूली न समायी।

हंसिनी जब तक छाया में खड़ी रही तब तक तो उसे ठंड लगती रही, लेकिन जब वह धूप में चली गयी तो गरमी के मारे उसका बुरा हाल हो गया। उसके शरीर पर अब रोएं तो थे नहीं, जिससे वह ठंड या गर्मी सहन कर सकती। अब तो हंसनी बहुत परेशान हुई। उसे अब पता चला कि रोएं उसके लिए कितने जरूरी थे।

इधर नाश्ते के समय मुर्गी अपने बच्चों को बुलाने गयी। उसके बच्चे कहीं दूर खेल रहे थे। मुर्गी जोर से चिल्लायी, 'ट्रि ट्रि टुं-टु टनन नीं।'

बच्चों के लिए यह आवाज एकदम नयी और डरावनी थी। वे यह सुनकर मुर्गी के पास आने के बजाय और दूर भाग गये। मुर्गी बहुत परेशान हुई। वह ज्यों-ज्यों उन्हें बुलाती त्यों-त्यों वे दूर भागते। अन्त में मुर्गी रुआंसी-सी होकर एक तरफ खड़ी हो गयी।

इधर जब बतख कूदती-फुदकती हुई तलाब में नहाने के लिए चली तो पानी में कूदते ही उसे काठ मारा गया। यह क्या? वह तो बिलकुल तैर नहीं सकती, अब क्या होगा? वह समझ गयी कि अपने चिपटे झिल्लीदार पंजों के कारण ही वह तेजी से तैर सकती थी अब तो वे रहे नहीं।

शाम को तीनों सखियां फिर एक जगह इकट्ठी हुईं। तीनों बड़ी दुखी और खोयी-खोयी-सी मालूम पड़ती थीं।

हंसिनी परेशान होते हुए बोली, 'मेरे शरीर पर से रोएं क्या गायब हुए, मेरी तो जान पर बन आयी। मैं या तो किसी दिन ठंड से ठिठुरकर मर जाऊंगी या गर्मी में झुलस जाऊंगी, उफ! मेरे रोएं अब कैसे वापस मिलेंगे?'

मुर्गी ने रोकर कहा, 'सितार की-सी आवाज मांगकर तो मैं भी पछता रही हूं। बच्चे मेरी बोली सुनकर दूर भाग जाते हैं, मेरे पास आने में कतराते हैं। हाय, अब मैं अपनी बोली कैसे वापस लाऊं?'

बतख उदास स्वर में बोली, 'मेरा तो और भी बुरा हाल है। मेरे ये नये पैर तो तैरने में कतई साथ नहीं देते। इनसे तो मेरे पुराने पैर कहीं अच्छे थे। हाय, मैं उन पैरों को फिर कैसे पाऊं?

अगले दिन सुबह फिर तीनों सखियां आंखें मूंद पूरब की ओर मुंह करके खड़ी हो गयीं।

और भाग्य से तीनों की इच्छाएं फिर से पूरी हो गयीं। हंसिनी अपने रोएंदार शरीर को देख खुशी से नाच उठी। मुर्गी 'कुकड़ूं-कूं, कुकड़ूं' चिल्लाती अपने बच्चों को ढूंढने चली गयी और बतख झिल्लीदार पंजे-वाले पैर देख खुशी के मारे तालाब में कूद पड़ी। ●

मान लीजिये ऐसा हो तो ?

मान लीजिये भारत में सबकी गरीबी दूर हो जाती है। वैज्ञानिक रूप से पूरा औद्योगीकरण हो जाता है तो क्या लोगों का रहन-सहन बदलेगा ? सोचने का तरीका बदलेगा ? नहीं ! सब चीजें ऐसे ही चलती रहेंगी जैसे अब चल रहा है बस फर्क पड़ेगा तो केवल यह...

नेताओं पर आलू, टमाटर व अंडों की जगह पोटेटो चिप्स, टोमेटो सॉस और फ्राईडऐग अथवा आमलेट फैंके जायेंगे। हो सकता है ऊंची श्रेणी की मीटिंग में काजू और बादाम पिस्ते फैंके जायें।

चमत्कारी बाबा लोगों को लॉकेट या अंगूठियां निकालने की बजाय कुछ और निकालना पड़ेगा जैसे डाइनर्स क्लब का कार्ड, भभूति की जगह टेल्कमपाऊडर, कैल्कुलेटर और इलेक्ट्रिक शेवर आदि।

लोग फिर भी वैष्णो देवी जायेंगे। साधन सम्पन्न पैराशूटों से वहां उतरेंगे। बैलूनों में वैष्णो देवी की यात्रा करेंगे।
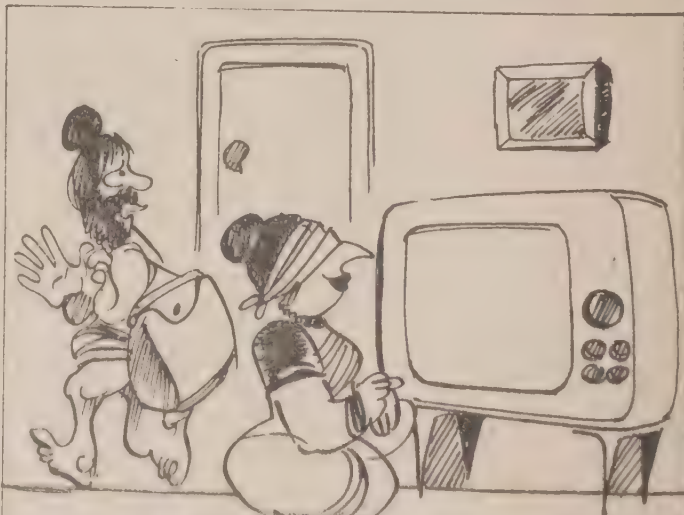
औरतें मूर्ख बनती ही रहेंगी। साधु लोग जेवर दुगना करने की जगह टी० वी० का स्क्रीन दुगना बड़ा बनाने, नये फ्रिज की कैपेसिटी दुगना करने का धोखा देते ही रहेंगे।

साधुओं की कुटिया फाइबर ग्लास की होंगी। बांह के नीचे रखने वाले क्लच में कम्प्यूटर फिट होगा जो बाबा के तप के टायम के बारे में सूचना देता रहेगा।

दहेज की रकम तय करने के लिए वर वधू पक्ष उच्च स्तर की गोष्ठियां करवायेंगे, जिसमें दोनों ओर से जाने-माने अर्थ शास्त्री भाग लेंगे। वित मंत्रालय के रिटायर्ड सैक्रेटरियों को खूब काम मिलेगा।

सासें बहुओं को महंगे एविएशन फ्यूल (जेट जहाजों में प्रयोग होने वाला तेल) से जलायेंगी।

भिखारियों के पास स्लॉट वाला कम्पयूटराइज्ड रजिस्टर होगा। दाता को सिक्का स्लॉट में डालना पड़ेगा। डिजिटल डायल पर कुल कितनी रकम इकट्ठी हुई, वह दर्ज होती रहेगी।

दादी मां पूजागृह में जाप करेंगी तो मैकेनाइज्ड कंठी का प्रयोग करेंगी। बटन दबाने पर कंठी एक रुद्राक्ष आगे सरकेगी चक्र पूरा होने पर लाल बत्ती जलेगी।

चेन खींचने वाले साइकिल या स्कूटरों के स्थान पर हैलीकॉप्टरों का प्रयोग करेंगे।

पृष्ठ १८ का शेष भाग

हजार रुपये अभी तक बरामद नहीं हुए। अनुमान है कि भारत में ही उसने वह धन कहीं छिपा रखा है। शायद उसका अनुमान था कि चार-पांच वर्ष कैद काटने के बाद इंगलैंड की जेल से वह छूटेगा और किसी तरह भारतीय अधिकारियों को चकमा देकर बच निकला तो उन रुपयों से वह काम चला लेगा।

अब मामले को एक-एक करके लें तो बात यह बनी कि छः वर्ष पूर्व उसने भोपाल में डाका डाला। एक महीने बाद जाली पास-पोर्ट के सहारे विदेश चला गया। बीच के दो सप्ताह दिल्ली में उसने अपनी बहन के घर छिपकर बिताया। इस बात का पता पुलिस को बाद में लगा। बहन के घर तलाशी ली गई वहां कुछ नहीं मिला। अब मजेदार बात यह है कि उसकी बहन शांति बहुत ईमानदार है और बुनाई सिलाई कर गुजारा करती है और सारे लोग जो उसे जानते हैं इस बात का समर्थन करते हैं। उस बेचारी को पुलिस के छापा पड़ने से पहले तक यह पता नहीं था कि उसका भाई डाकेजनी करता है। वह यही सोचती रही कि जग्गी भोपाल में कहीं नौकरी करता है।

राजू बोला, 'अलीबाबा को लिखे पत्र में जग्गी ने कहा है कि मेरी भतीजी झिलमिल से दिल्ली मिलना। शायद उसके पास छुपा रखे हों पैसे।

चन्देल ने धुयें का गोला बनाया, 'राजू इस बात की पहले ही जांच की जा चुकी है क्योंकि उसके पत्र का गुप्तचर विभाग को पहले ही पता है। विदेश से आये पत्रों को इंटैलीजेंस विभाग ही तो सेंसर करता है। उन्होंने भी पुलिस द्वारा पूरी छान-बीन इसी सूत्र पर करवाई! सच्चाई तो यह है कि जग्गी के झिलमिल क्या किसी और नाम की भी कोई भतीजी नहीं है। अंत में इंटैलीजेंस वालों को यह निष्कर्ष निकालना पड़ा कि पत्र में कोई गुप्त बात नहीं है। इसीलिए वह पत्र बिना जब्त किये अलीबाबा को डिलीवर किया गया। तुमसे पहले इंटेलीजेंस वालों ने वह पत्र लेबोरेटरी में अच्छी तरह जांचा था।'

इन्स्पेक्टर चंदेल आगे की ओर झुके, 'अब मेरी बात ध्यान से सुनो, अब तक साफ है अलीबाबा को वह डाके की रकम नहीं मिली।

कुछ और गुंडों को भी इस रहस्य की हवा लगी और वह यह समझ कर अलीबाबा के पीछे पड़ गये कि जग्गी के लिखे पत्र द्वारा अलीबाबा को उस गुप्त स्थान का पता लग गया है। या तो अलीबाबा उनके डर से गायब हो गया या उन्होंने उसे पकड़ लिया और उसे यातना दी। अलीबाबा को कुछ पता हो तो बतायें! कुछ गुंडों ने उसे मार डाला होगा। फिर अचानक एक वर्ष बाद तुम्हारे द्वारा अलीबाबा के संदूक के खरीदे जाने की बात अखबार में पढ़ दोबारा संदूक के पीछे इस आशा में पड़े कि सन्दूक में छिपे धन का सुराग मिले। कोका ने संदूक तुमसे खरीदा तो वह कोका के पीछे पड़ गये और उसे घायल कर सन्दूक ले भागे। हो सकता है एक गेंग नहीं कई गेंग इसमें दांव-पेच लड़ा रहे हों। एक बात साफ है कि इन अपराधियों को एक बात का पूरा विश्वास है कि सन्दूक में छिपे धन का सुराग है! हैं?'

तीनों ने सहमति में सिर हिलाया!

'अच्छा तो अब...' चन्देल ने कहना जारी रखा, 'संदूक उनके कब्जे में हैं। उन्होंने उसकी अच्छी तरह तलाशी ली होगी और उन्हें भी कोई सूत्र नहीं मिला होगा। अब जरा सोचो वह क्या सोचेंगे?'

राजू ने तुरंत बात पकड़ ली! उसका सिर चकरा गया! महिन्दर ने देखा कि श्याम की बात समझ नहीं आई है तो स्पष्ट किया, 'वह सोचेंगे कि हमने वह भेद बताने वाला सूत्र संदूक से पहले ही निकाल लिया और फिर बिना सूत्र का संदूक कोका को दे दिया। वह सोच रहे होंगे लूट की रकम का सुराग हमारे पास ही होगा।'

लेकिन यह कैसे?' श्याम चिल्लाया, 'हमारे पास कोई सुराग या सूत्र नहीं है! हमारे पास कुछ भी नहीं है।'

'मैं जानता हूँ बेटे।' चन्देल बोले, 'और तुम भी इस बात को जानते हो लेकिन वह गुंडे तो यही समझते हैं कि भेद तुम्हारे पास है।'

तीनों ने गौर किया! बात सही थी!

'आपका मतलब है...!' राजू ने सूखे गले को तर करने के लिए थूक निगलते हुए कहा, 'कि-कि संदूक से छुटकारा पाने के बावजूद हम खतरे में हैं?'

चंदेल ने गम्भीर मुद्रा बनायी, 'मुझे डर है बेटे कि यह बात सही है। मैंने तुम्हें चेतावनी देने के लिए ही यहां बुलाया था होशियार रहना! घर के आस-पास गुंडे किस्म के लोग चक्कर काटते दिखायी दें या कोई तुमसे संदूक के बारे में मिलना चाहे तो पहला काम यह करना कि मुझे सूचित करना। करोगे न ऐसा?'

'जरूर करेंगे अंकल।' श्याम ने आश्वासन दिया!

तीनों चंदेल से बिदा होकर बाहर निकले तो गम्भीर थे। पिक्चर जाने का ख्याल न जाने कहां उड़ गया था। उन्हें दूसरे दिन स्कूल जाना भी खतरे से खाली न लग रहा था!

कुत्ते और बिल्ली

'जितना मैं इस मामले पर सोचता हूं उतना ही लगता है हमने गर्दन फंसा कर गलती की।' श्याम ने मेज पर मुक्का मारा।

'और तुर्रा यह कि संदूक से छुटकारा पाकर हम समझे थे कि हमने मुसीबत से छुटकारा पा लिया! अब क्या होगा?' महिन्दर ने जोड़ा।

तीनों जासूस अपने हैडक्वार्टर में मामले पर अपने अपने विचार प्रकट कर रहे थे। दो निराश और कुछ झल्लाये हुए से लगते थे। राजू भी चिन्तित नजर आ रहा था। माथे पर बल डाल कर बोला, 'मुझे लगता है यह लोग गुंडे और बदमाश तब तक पीछा नहीं छोड़ेंगे जब तक डाके की छिपी रकम का आखिरी फैसला नहीं हो जाता। सबसे बढ़िया तो यह रहेगा कि समस्या हल कर दी जाए। छिपे धन का पता लगा कर खूब प्रचार के साथ पुलिस के हवाले कर दिया जाए। तब वह हाथ मल कर शांत हो जायेंगे।'

'क्या तीर मारा है!' श्याम ने व्यंग्य-वाण छोड़ा, 'बस हमें उस छिपे धन का पता लगाना है जिसे पुलिस और गुप्तचर विभाग नहीं खोज सके। जादूगर हिम्मत हार कर भाग गये। इतना ही आसान होगा जितना रसगुल्ला मुंह में डालना और सीधे पेट में। चलो फटाफट शाम की चाय से पहले केस हल कर लो और फिर ईवनिंग शो देखते हैं।'

'श्याम ठीक कह रहा है।' महिन्दर बोला, 'हमारे पास छुपे धन को खोजने के लिए कोई सुराग ही नहीं है।'

'यह बहुत कठिन काम होगा।' राजू ने कहा, 'यह तो मैं भी मानता हूँ लेकिन जब तक उस धन का पता नहीं लगता हमें न वह चैन से रहने देंगे न हमें शान्ति मिलेगी। हम तीन जासूस हैं। यह हमारे लिए चुनौती है।'

'हम कहां से शुरू करें?' श्याम ने पूछा!

'देखो बाकी तो सारे तथ्यों का पता लग चुका है। हमें केवल यह जानना रह गया है कि जब वह अपनी बहन के पास दो सप्ताह छुपा रहा तो क्या करता रहा।' राजू ने सुझाया।

महिन्दर ने आपत्ति की, 'लेकिन उससे तो पुलिस पहले ही पूछताछ कर चुकी है। जो कुछ वह जानती थी उसने उन्हें बता दिया! जब पुलिस उससे कुछ हासिल न कर सकी तो हमें क्या हासिल होगा?'

क्रमशः

सवाल यह है ?

संसार में पेट्रोल की कमी हद से ज्यादा बढ़ गई तो क्या होगा ?
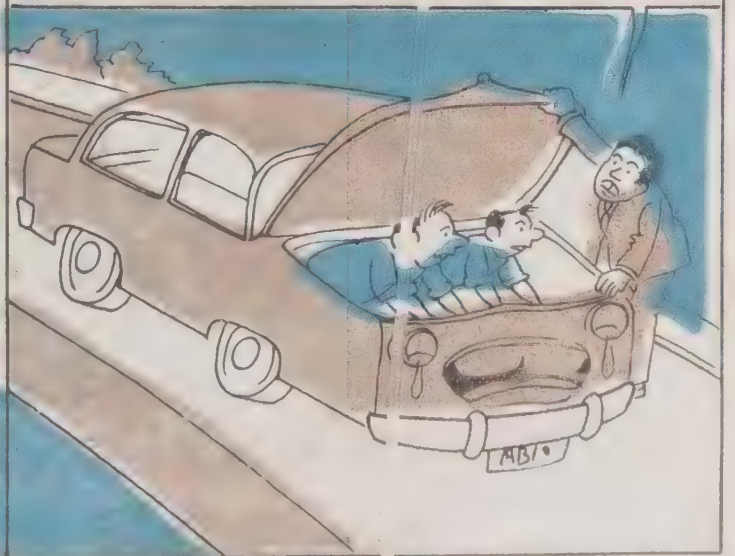
इस सवाल के कुछ और लाजवाब चित्र देखिए हमारे आगामी अंक में।

पहचानिये ?

प्रतियोगिता

इनाम 20 रु०

आपको सिर्फ यह बताना है कि

- यह किस फिल्म का सीन है?
- कलाकार कौन हैं ?
- और कौन क्या दीवानी बात कह रहा है?

अन्तिम तिथि 30 सितम्बर १६८०

जल्दी से अपने हल केवल पोस्टकार्ड पर, निम्न लिखित पते पर भेज डालिये

पहचानिये प्रतियोगिता
दीवाना कार्यालय 8-B बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली - 110002.

दीवाना-कैमल रंग भरो प्रतियोगिता नं. १४ का परिणाम।

प्रथम पुरस्कार—संदीप गौतम, बाड़मेर (राज०)

द्वितीय पुरस्कार—सतेन्द्र पाल सिंह, नई दिल्ली

तृतीय पुरस्कार—राजीव कुमार चौधरी कलकत्ता

कैमल आश्वासन पुरस्कार

१. कमलकान्त साहू—बालोद (दुर्ग), २. अरविंद तिवारी—कोटा (राज०), ३. कुमारी अपर्णा साह—गिरिडीह (बिहार), ४. राजेन्द्र चौपडा-जालन्धर नगर (पंजाब), ५. महेन्द्र कुमार-नई बस्ती, सीलमपुर (दिल्ली)।

दीवाना आश्वासन पुरस्कार

१. रजनीश कुमार धीमान-लुधियाना, २. ललिता पाराशर—विश्वास नगर (शाहदरा-दिल्ली), ३. प्रशान्त गुप्ता—राजेन्द्र नगर (नई दिल्ली), ४. हरीश कुमार तुलसीदास-गांधी धाम, ५. पंकज मिश्र—गोपाल गंज (सागर)।

सर्टीफिकेट्स

१. कमल किशोर-अजमेर, २. सुनीत सिन्हा-अलीगढ़, ३. रमाकान्त राव-नागपुर (महा०) ४. सुरेन्द्र सिंह गुसाई—नई दिल्ली ५. सुनील कुमार गुप्ता—रांची (बिहार) ६. वन्दना कुमारी सक्सेना—सारंगपुर (राजगढ़) म० प्र०, ७. कुमारी नीता झा—जगदलपुर (बस्तर), ८. कुमारी नन्दा सकु लानी-रुद्रपुर (नैनीताल), ९. परवीन कुमारी-बम्बई, १०, रामरतन अग्रवाल-मेरठ शहर

परिणाम

अंक नं० ८ में प्रकाशित गेंद ढूंढ़िये प्रतियोगिता का परिणाम

हमे खेद है कि किसी भी पाठक ने सही हल नहीं भेजा ——सं०

अंक नं० १० में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

न	म	क	ह	रा	म
गा	■	ला	■	स	त
डा	ल	पा	त	■	ल
■	हू	र	■	वा	बी
न	■	खी	र	■	या
ली	चौ	■	क	स	र

विजेता :—
सुरेन्द्र चोपड़ा
83-A, गुरू नानक नगरी
पटेल चौक,
जालन्धर
पंजाब

अंक नं० ११ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

टै	रु	ट	मै	च
गो	वा	■	ना	क
र	मी	■	■	म
■	भ	र	स	क
र	क्त	चा	प	■

विजेता :—
पृथ्वीराज शर्मा
साईकल डीलर
माल रोड
सोलन

● एक बच्चा एक घर के आगे दरवाजे पर बैठा था। एक आदमी उसके पास आया और बोला, 'तुम्हारे डैडी घर है ?'

जी हां, बच्चा बोला।

उस आदमी ने बैल बजाई, दरवाजा खटखटाया लेकिन कोई नतीजा न निकला, अन्त में वह झुंझला कर बच्चे से बोला…तुम तो कह रहे थे तुम्हारे डैडी घर पर हैं ?

…डैडी तो घर पर हैं…मगर हमारा घर तो सामने वाला है।

● एक युवक को बहम की बीमारी थी। वह इलाज के लिए छः महीने अस्पताल में रहा। वह छुट्टी करके वहां से जाने लगा तो डाक्टर बोला—तन्दुरुस्त होकर जा रहे हो तुम्हें इस चीज की बधाई हो।

अजी काहे की बधाई युवक भुनभुनाकर बोला, 'मुझे यहां फायदा ही क्या हुआ है। कल जब मैं यहां आया तो बादशाह अकबर था लेकिन अब फकीर बन कर जा रहा हूँ।'

● एक प्रसिद्ध निर्माता स्टूडियो से बाहर निकले तो तभी उनकी नजर एक गधे पर पड़ी। उन्होंने फौरन हाथ जोड़कर प्रणाम किया और मुस्करा कर चल दिये।

अमरानी जी ये सब दृश्य दूर से देख कर उस निर्माता के पास आकर बोले…मैं तुम्हारी सारी बातें तो समझ गया मगर तुमने उस सड़क पर चलते गधे को हाथ क्यों जोड़े ?

यही तो फिल्मी दुनिया है। हो सकता है कल गधे का सितारा भी चमक जाए।

● सुरेश ने अपने मृत मित्र रमेश की युवा पत्नी से कहा, 'आपके पति मेरे बचपन के मित्र थे। मैं उनकी कोई चीज याददाश्त के तौर पर ले जाना चाहता हूं, अगर आपकी इजाजत हो तो।''

विधवा, ''जरूर ले जाइये। उनकी सबसे कीमती चीज ले जाइये। वे मुझे अपने जीवन का बहुमूल्य रत्न समझते थे।'

● एक क्षेत्र में विवाह के समय ऐसा रिवाज था कि वर व वधू आपस में हाथ मिलाते थे। एक बार एक बाहरी व्यक्ति ने इस रिवाज पर आश्चर्य प्रकट किया तो उत्तर मिला, 'इसमें अनोखी क्या बात है ? आपने देखा होगा कि अखाड़े में भिड़ने से पहले पहलवान भी आपस में हाथ मिलाते हैं।'

● एक आदमी शहरी जिन्दगी से ऊब गया और नयी जिन्दगी शुरू करने गांव गया। एक किसान के यहां नौकर लग गया। दूसरे दिन किसान से पत्नी ने कहा, 'यह शहरी आदमी यहां नहीं चलेगा।'' किसान, 'क्यों ?'

पत्नी, 'आज सुबह मैंने बाल्टी देकर उसे गाय दुह कर दूध लाने भेजा। वहां बछड़ा किसी तरह रस्सी तुड़ा कर गाय का दूध पी रहा था। वह जाकर बछड़े के पीछे लाइन में खड़ा हो गया।

● रामू यूं तो जबान हो गया था लेकिन कद छोटा रह गया। एक दिन शेव बनाने नाई की दुकान पर पहुंचा और शेव बनाने के लिए कहा। नाई ने उसका कद देखकर उससे चुहल की, 'बेटा, अपनी अम्मा से पूछ कर आये हो ?'

रामू के तन बदन में आग लग गयी, 'मिस्टर तुम्हें पता है मुझे हर दो घंटे बाद शेव बनानी पड़ती है।' आखिर दाढ़ी मूंछ जबानी की निशानी हैं।

नाई ने कहा, 'अच्छा। तो बेटे अगर दो घंटे बाद तुम्हारे दाढ़ी उग आई तो तुम्हारा शेव फ्री कर दूंगा।'

'ठीक है।' रामू ने चुनौती स्वीकार की। नाई ने उसकी खूब अच्छी तरह हजामत की।

दो घंटे बाद नाई का मुंह खुला का खुला रह गया जब उसने देखा कि रामू ने उसकी दुकान में प्रवेश किया है और उसके चेहरे पर घनी दाढ़ी उगी है। उसने दाढ़ी को झटका देकर देखा कि नकली तो नहीं है। दाढ़ी असली थी। उसे अपना सा मुंह लेकर फ्री शेव करना पड़ा।

उसे क्या पता था कि रामू के एक जुड़वां भाई भी है शामू।

● एक मित्र, 'जिस दिन मुझे कहीं बाहर जाना होता है रात को नींद नहीं आती।'

दूसरा मित्र, 'तो तुम एक दिन पहले चले जाया करो।'

ढोल की पोल

खाना ! जी हां खाना बड़ी महत्व-पूर्ण चीज है। एक आदमी का खाना देख आप उसके भूत, भविष्य, मिजाज, पेट का हाल और व्यवहार आदि सैंकड़ों बातों के बारे में अन्दाजा लगा सकते हैं। यूं कहिये खाना किसी व्यक्ति के चरित्र की एक खिड़की है जिसमें से झांक कर आप उसके कई गोपनीय रहस्य जान सकते हैं। हमने देश के मशहूर नेता लोग क्या खाते हैं यह जानने के लिये कभी खानसामा बन कर तो कभी वेटर बनकर, कभी चमचा बनकर तो कभी कुत्ते का रूप धारण कर जासूसी की और पता लगाया कौन क्या खाता है। इस फीचर में नेताओं का खाना और दीव... के मनोवैज्ञानिक का विश्लेषण पढ़ें तो आ... पता लगेगा कि खाना नेताओं की पोल खोलता है

चरम सिंह

सुबह—चाय।

नाश्ता—दूध की चाय, भीगे चने, मूंगफलियां।

लंच—एक दाल, सब्जी, बेसनी रोटी, दही।

शाम—चाय, मूंगफलियां।

डिनर—दाल-सब्जी, चपातियां और खाने के बाद गुड़।

विश्लेषण—

१. मूंगफलियां ज्यादा खाने के कारण इस व्यक्ति की ओर बन्दर आकर्षित होंगे। अब आपको पता लग गया कि खाजनारायण चरम सिंह के हनुमान क्यों बने थे)?

२. इस शख्स का दिमाग अस्थिर होगा क्यों कि बन्दर पने की चंचलता का प्रभाव पड़ेगा।

३. भीगे चने ताकतवर चीज है इसके जोश में आकर कई इन्कवाइरी कमीशनें बनायेगा

४. चने घोड़ों का पसन्दीदा भोजन है, इससे घोड़े के गुण भी इसमें पाये जायेंगे ! हो सकता है कि प्रधानमंत्री की कुर्सी पर लीद करके भाग जाये।
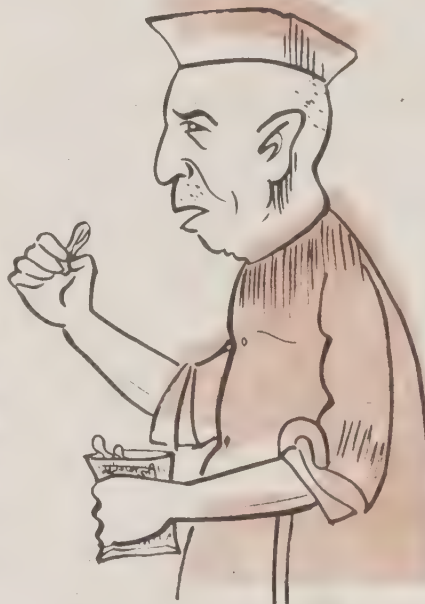
५. रात को गुड़ खाने का असर यह होगा कि यह जिस कुर्सी पर बैठेगा कुछ ही समय में वहां का गुड़ गोबर कर देगा।

डंठल बिहारी वाजपेयी

नाश्ता—दूध, दलिया, मेवे तथा कार्नफ्लेक्स।

खाना—दाल-रोटी, चावल व हरी सब्जी

विशेष लगाव—भांग तथा देशी घी (जो खाने में जरूर होना चाहिये)।

विश्लेषण—

१. भंग पीने का असर यह होगा कि कभी मंत्री बन गये तो वह लोक-सभा भी जल्दी ही भंग होगी।

२. कविता में लिखने का रोग लगेगा (भंग पीने के बाद ऐसी ही उल्टी सीधी सूझती है)।

३. देशी घी के शौक का नतीजा यह होगा कि यह भाई जब भी मौका लगेगा विदेश यात्रा को खिसक जायेंगे. क्योंकि भारत में तो अब देशी घी मिलता नहीं विदेशों में ही मिलेगा ! आजकल का भारत का देशी घी सूअर की चर्बी, आलुओं का कचूमर, बनस्पति घी तथा ग्रीज के घोल का नाम है।

हेमवती नंदन बहगम...

मुख्य शौक—नॉन वेजीटेरियन खाना। ... भिन्न प्रकार के पकवानों का शौक है। ... समय पानी नहीं पीते। चिकन रोज चा...

विश्लेषण—

१. जिस पार्टी में रहेंगे वह... चिकन आऊट (दुम दबाकर भागना) ... की योजनाओं में व्यस्त रहेंगे।

२. रोज खाना बदल-बदल कर खाते हैं ... के प्रभाव में दल भी आये रोज बद...

३. जिस पार्टी को छोड़ेंगे उसके नेताओं... पानी पी-पी कर कोसेंगे। क्योंकि... खाना खाते समय पानी नहीं पीते ... उसकी कसर यहाँ पूरी करेंगे।

४. तबीयत से रसिया होंगे। चिकन ... के बाद उन्हें प्रायः मुर्गी की त... रहेगी।

चंद्र शेखर

मनभाता खाजा—चंद्र शेखर भारतीय ... तो खाते ही हैं लेकिन उनकी मुख्य कम... चाइनीज भोजन है

विश्लेषण—

१. दाढ़ी के बाल जल्दी ... हो जायेंगे क्योंकि उन पर सिरका गिरे...

२. चाइनीज भोजन में सब्जियों को बा... काटा जाता है। यह भी जिस पार्टी... अध्यक्ष बनेंगे उसके सब्जी की तरह... छोटे टुकडे बनेंगे।
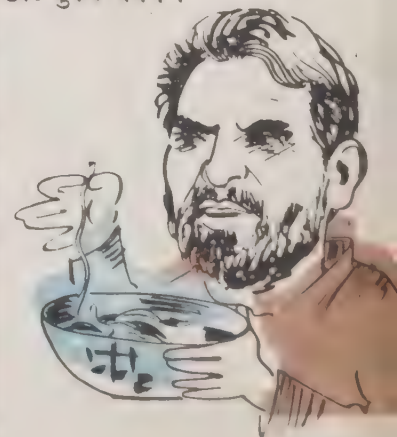
खाजनाराण

खाना—

सुबह—एक केतली दूध और एक केतली चाय।

नाश्ता—दलिया, कार्नफ्लेक्स, एक केतली फलों का रस, छः टोस्ट और दो केतली दूध।

लंच—एक केतली दूध, तले प्याज, छः बेसन की रोटियां, चावल, दाल, सब्जी, खिचड़ी, मेथी, बथुआ एक किलो, खीरा एक किलो, लहसन और एक किलो फल।

शाम—एक केतली दूध और केतली करेले के फलों का रस।

डिनर—एक किलो बेसन की रोटियां, एक केतली दूध, ४०० ग्राम पनीर, दाल, चावल, सब्जी, दलिया, खिचड़ी, कढ़ी, पकौड़े, बथुआ एक किलो, खीरा एक किलो, लहसुन आधा किलो, खीरा एक किलो, लहसुन प्याज, एक केतली फलों का रस और एक केतली दूध।

विश्लेषण— १. यह आदमी का भोजन नहीं एक जंगली भैंसे की खुराक है। ऐसे आदमी के लिये अकल से भेंस बड़ी होगी।

२. इतने भोजन का जो गोबर बनेगा वह प्रेशर के कारण सिर की तरफ जायेगा जहां खाली जगह में भर जायेगा! लिहाजा इस आदमी के दिमाग में गोबर भरा होगा।

३. पेट में हर समय २००० घनफुट गैस का दवाब बना रहेगा अतः यह शख्स गैस के प्रेशर के कारण कुछ न कुछ हँगामा खड़ा करता रहेगा। गैस मुख्यतया बथुये से साग से बनेगी।

४. इस व्यक्ति की बीवी साथ नहीं रहेगी। इतना खाना जुटाने की वजह से वह अपने गांव बैठे दस डंगरों का चारा जुटाना ज्यादा पसन्द करेगी।

५. इस व्यक्ति की कोठी के फ्लश की पाइप जाम होगी आये दिन।

कभी-कभी खीर बनाने की कोशिश पर दलिया बन जायेगा।

खाना—मीठे फल, बादाम, सूखा मेवा, मीठा दही, और दूध गुनगुना।

पीना—(यह तो सभी जानते हैं क्या बताना)

विश्लेषण— १. सूखा मेवा खाने के कारण मिजाज भी सूखा रहेगा, मुंह भी सूखा रहेगा।

२. बादाम अफगानिस्तान से आते हैं अतः आदतन अफगान के टट्टू की तरह अड़ियल होगी।

३. खान-पान के अपने सख्त नियमों की सख्ती बरतते-बरतते आदतें भी सख्त हो जायेंगी। सख्त आदतों के कारण प्रायः सख्त मुश्किलों में फंसना पड़ेगा और एक दिन सख्त धक्का भी लग सकता है।

चार्ल्जफर्नान्डीस

विशेष शौक:—यूरोपीय व्यंजन, एगकरी, चिकनकरी, सींक कबाब, खुम्भी तथा इडली डोसा। तले और खूब भुने व्यंजन मन-भाता खाजा है।

विश्लेषण—१. तले भुने खाने के कारण इनके वक्तव्य भी जले भुने होंगे! मुंह से भाषण देते समय सींक कबाब भुनने लायक आग निकलेगी

२. खुम्भी खाने के कारण शरीर पर बाल अधिक होंगे।

नाश्ता—दूध, कार्नफ्लेक्स, हार्लिक्स व फीकी चाय।

खाना—दलिया, पनीर, दही, हरी सब्जियां तथा (सुबह शाम फलों का रस)।

परहेज—तली चीजें।

विश्लेषण—१. मीठा नहीं खाते अतः कड़वे अनुभव होंगे।

२. फल न खाकर फलों का रस पीते हैं इससे संकेत यह मिलता है कि इन्हें फल प्राप्त नहीं होगा ये रस पीते रह जायेंगे और फल तथा गूदा काली गाय मूत्रों पघार वाले की, और काम चलाऊ जाट की भेंस खा जायेगी।

३. इनकी दाल नहीं गलेगी क्योंकि यह दाल खाते ही नहीं हैं।

मुख्य भोजन—दाल, चावल, मेवे, दही और आलू से बनी चीजों से विशेष लगाव।

विश्लेषण—१. प्रवृति दाल चावल वाली होगी यानि दाल चावल खाओ प्रभु के गुण गाओ। अधिकतर समय प्रभु के गुण गाने में बीतेगा।

२. जिस प्रकार आलू हर जगह पैदा होता है उसी प्रकार ये सज्जन हर मंत्रालय में काम करेंगे व हर जगह यश पैदा करेंगे।

राजू और मुखौटा
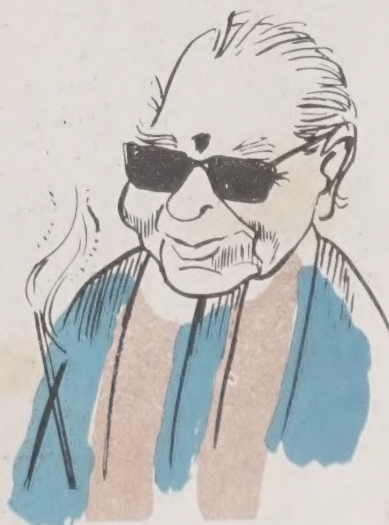
राजू की छोटी बहन मीना का जन्मदिन था. राजू के लिए यह खुशी का मौका था. नंदू, विनय, रेखा, अशोक सभी बच्चे शानदार तोहफे लाने वाले थे.

राजू की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या दे. वह कोई खास चीज़ देना चाहता था, जो सबसे अलग नज़र आये.

उसने बहुत देर तक इस बारे में सोचा. अचानक उसके दिमाग में एक बात आई.

उसने सोचा– क्यों न एक अच्छा सा मुखौटा बना कर दिया जाए ? जिसकी टोपी में हरी पट्टियाँ हों, गालों पर गुलाबी रंग और लाल-लाल होंट.

उसने जल्दी-जल्दी में गत्ते का एक टुकड़ा लिया और ब्रश से उस पर तेज़ हाथ चलाये. फिर क्या था— मुखौटा तैयार हो गया. उसने उसे काटकर रख लिया.

मीना ने जब उस रंग-बिरंगे तोहफे को देखा, तो वह खुशी से नाच उठी. हर कोई राजू और उसके तोहफे की तारीफ़ कर रहा था.

अगर राजू रंगने का काम कर सकता है तो तुम क्यों नहीं ?

कॅमल

वॉटर कलर्स
और पोस्टर कलर्स
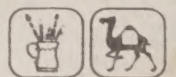
कॅम्लिन प्रायव्हेट लि.
आर्ट मटीरियल डिविजन,
बम्बई-४०० ०५९.

कैम्लिन अनब्रेकेबल पेन्सिल
बनानेवालों की ओर से

...मार अस्पष्ट द्वारा ... मोहन, प्र० कोशी ... सहरसा, १६ वर्ष, ...ा, गाना सुनना, ...ना।

अशोक महेश्वरी, सत्यनारायण जी के मन्दिर के सामने, सदर बाजार, बाड़मेर, १४ वर्ष, किताबें पढ़ना, दीवाना पढ़ना, मोटर साइकिल चलाना।

अशोक जौहर 'गगन' ६७-मोती बाजार, देहरादून (यू० पी०) २७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, रेडियो सुनना, सैर करना।

जब्बार दिलकश, धान मण्डी, बीकानेर, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फरमाईश भेजना, बड़ों का आदर करना, मोटर साईकिल चलाना।

मन मोहन सिंह पजानियां, नकशा नवीस, धर्मशाला (हि० प्र०), २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, क्रिकेट में दिलचस्पी रखना।

सुरेश कुमार मलंग, न्यू इण्डिया फेन्सी स्टोर बस स्टेण्ड बलागीर (उड़ीसा), १७ वर्ष, सिनेमा देखना सैर करना।

कन्हैया लाल वाधवानी, मकान नं० ७/८७ अमला टोला, कटिहार, २० वर्ष, शायरी लिखना, भाई-बहनों से प्यार।

...ह अरोरा, अरोरा ... महेन्द्र गढ़ (मध्य ... वर्ष, बैडमिन्टन ...पत्र-मित्रता करना ...।

अनिल गुप्ता द्वारा सूरज भान सदर बाजार, (गुड़गावां), १६ वर्ष, पहलवानी करना, दूर-दूर की सैर करना और खुश रहना।

सतोष कुमार माहेश्वरी, १८ हरीगंज खंडरा, २२ वर्ष, मुस्कराते रहना, दूसरों को खूब हंसाना, फिल्में देखना और दिखाना।

मो० इब्राहीम, प्रधान स्टोर १६६ बी० सत्तार बिल्डिंग ओ.पी.पी. ग्रांट रोड स्टेशन एक्स लेन बम्बई, २४ वर्ष, दोस्ती करना।

अशोक रोहानी, ६२४ गल-गला जबलपुर, १५ वर्ष, पत्र व्यवहार करना, क्रिकेट खेलना, सवेरे उठकर दौड़ लगाना।

संजय सुप्रीम, आनन्द भवन (न्यु एरिया) बड़ी खंजरपुर, भागलपुर, १६ वर्ष, पढ़ना, घूमना, छोटे बच्चों से अधिक प्यार करना।

चिरंजी लाल मौर्य पुत्र श्री गौरी लाल मौर्य, मौर्य कालोनी, फतेहपुर रोड सीकर (राजस्थान), १८ वर्ष, सत्य का पालन करना।

...र 'चवल', श्री ...० सिन्हा, खजांची ... १६ वर्ष, घूमना, ...ना, डाक टिकट ...।
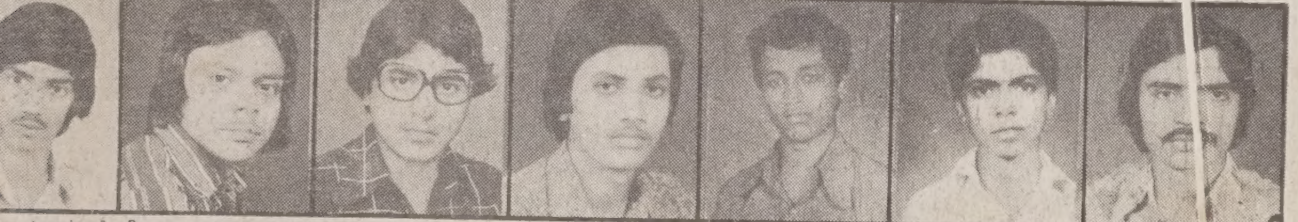
विजय खन्ना, के प्रेम ऑटो-मोबाईल्स चौथाई कुली, झरिया धनबाद, १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना, फिल्म देखना, खेलना।

किशोर कुमार, मुरली जनरल स्टोर्स गोल बाजार बिलास-पुर (म० प्र०), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फिल्म देखना।

मुमताज अहमद खां, मोहनी राईस मिल, कटरा बस्ती (उ. प्र.), १८ वर्ष, रेडियो सुनना और शिकार खेलना, दोस्त बनाना।

प्रकाश दीप कमल, गांधी मैदान, सिवान (बिहार), १६ वर्ष, सिनेमा देखना, सब से प्यार करना, माता-पिता की सेवा करना।

जग्गु सिंह, सदर अस्पताल के पास सासाराम (रोहतास), १३ वर्ष, फिल्म देखना, पढ़ना, गाने गाना, बांसुरी बजाना, खुश रहना।

अमीत माखीजा, कृष्ण वस्त्र भण्डार बलांगीर, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता, टिकट संग्रह करना, ताश खेलना और शतरंज खेलना।

...र टाक, गोविन्द ... के पास कमल ...१८ वर्ष, क्रिकेट ...पास पढ़ना तथा ...।

अशोक कुमार गुप्ता, १०६४, कूचा नटवां चांदनी चौक दिल्ली, २० वर्ष, नावल पढ़ना, क्रिकेट खेलना, घूमना, गीता पढ़ना।

रणबीर सिंह कबाड़ी, मेन बाजार मानसा, २० वर्ष मन लगाकर काम करना, दूसरों में ऊंचा रहना, फिल्म देखना।

आनन्द सिंगी द्वारा संजीव खोसला मुलतर पटियाला, १६ वर्ष, नये गीतों हीरोइनों को पसन्द करना, फिल्म देखना, टहलना।

अशोक कुमार अग्रवाल पुत्र श्री रामानुज अग्रवाल, १६६ सहाकारा बरेली (यू० पी०), १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना पत्र-मित्रता करना।

बलजीत गिल, ५७८-ए, सिविल लाइन मोगा, १८ वर्ष, कहानी, कविता और नावल लिखना, सबके साथ अच्छा व्यवहार करना।

शिव शंकर सिंह, मिश्रा पान बीड़ी शाप, शासन डाक कुलावा, २४ वर्ष, प्रेम में रहना, और गरीबों की मदद करना।

...वाल, ४३, ...इन्दौर (म० ... पत्र-मित्रता ...कट संग्रह

अमर सिंह टपरेपाल विद्यार्थी एम. काम., कमरा न. ४०-एफ. न्यु बयाज हॉस्टल, हिमाचल प्रदेश विश्व विद्यालय शिमला, २१ वर्ष, पढ़ना।

महेन्द्र सिंह, ८५/३ कोपर गंज कानपुर, १८ वर्ष, पढ़ना, बच्चों से अधिक प्यार करना, सब का आदर करना और खुश रहना।

रमेश कुमार बजाज, ८६, कुंवर नगर जल गांव (म. प्र.), १७ वर्ष, हर नई बात करना, हर प्रकार की विशेषता रखना।

श्री रंग कृष्ण गोर्खाली ५/११३ फ्रिक स्ट्रीट काठमाण्डो, नेपाल, १८ वर्ष, सभी भाषाओं में बात करना, छोटे आदमियों से बात करना।

सरफराज एच. खान, ग्राम खैरवाड़ा उदयपुर (राज०), १८ वर्ष, जासूसी उपन्यास पढ़ना, फुटबाल खेलना, टिकट संग्रह करना।

श्याम नारायण माथुर, १२३/६५, उदावत पैलेस, मौहल्ला कास्थ अजमेर (राज०), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना तथा कहानी लिखना।

...नी सराय ... फुटबाल ...प्यार से ...रना, पत्र

मनमोहन शर्मा, मकान नं० ३३१/३० पी राजगढ़ गली न. २, २० वर्ष, फिल्मों की जानकारी प्राप्त करना तथा खेलना।

लक्ष्मी जैन 'अजनबी' ३/३ क्रिस्टो पाल लेन कलकत्ता २२ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, नए-नए लोगों से सम्पर्क करना।

पंकज कुमार घोष द्वारा श्री आर. सी. घोष (ए.वाई. एम. इन्चार्ज), पी. विरमित्रपुर, जिला सुन्दर गढ़, १४ वर्ष, चित्रकारी करना।

जोहन श्रेष्ठ, ५/६६४ झोहे टोल काठमाडौं (नेपाल), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, सबको जूडो सिखाना, आदर करना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

...ना फ्रेंड्स क्लब

... के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक-विश्वबन्धु गुप्ता।

Regd. No. D (D) - 275

राम और श्याम

'असली निशाना'